तमसो मा ज्योतिर्गमय

शिक्षा सारथी

विद्यालय शिक्षा विभाग, हरियाणा की मासिक पत्रिका

वर्ष- 11, अंक - 5, अप्रैल 2023 , मूल्य-15 रु

schooleducationharyana.gov.in | shikshasaarthi@gmail.com

समझ-बूझ और ध्यान से होगा पढ़ना और पढ़ाना
पहली सीढ़ी आरोहण कर 'निपुण' बनेगा हरियाणा

श्री मनोहर लाल
माननीय मुख्यमंत्री, हरियाणा

NIPUN HARYANA

हरियाणा का हर बच्चा
भाषा, गणना का पक्का

श्री कँवर पाल
माननीय स्कूल शिक्षामंत्री, हरियाणा

हम एस.एम.सी. ही हैं निपुण हरियाणा के परिचालक हमारे सहयोग से निपुण बनेंगे राज्य के हर बालिका और बालक

निपुण हरियाणा का लक्ष्य - कक्षा 3 तक हर विद्यार्थी को भाषा को समझ कर पढ़ने और गणना करने (FLN) में निपुण बनाना।

निपुण हरियाणा में स्कूल प्रबंधन समिति (एस.एम.सी.) की भूमिका

जानकारी और विचार उपलब्ध करना

स्कूली फैसलों में माता-पिता को शामिल करना

अभिभावक सर्वेक्षण करना

संसाधन प्रदान करना

साझेदारी के लिए एक समावेशी वातारवण बनाना

समझ बूझ और ध्यान से होगा पढ़ना और पढ़ाना, पहली सीढ़ी आरोहण कर, निपुण होगा हरियाणा

स्कूल शिक्षा विभाग
हरियाणा सरकार

तमसो मा ज्योतिर्गमय

शिक्षा सारथी

अप्रैल 2023

प्रधान संरक्षक
मनोहर लाल
मुख्यमंत्री, हरियाणा

संरक्षक
कँवर पाल
स्कूल शिक्षामंत्री, हरियाणा

मुख्य संपादक
राजेश खुल्लर
अतिरिक्त मुख्य सचिव,
विद्यालय शिक्षा विभाग, हरियाणा

संपादकीय परामर्श मंडल
डॉ. अंशज सिंह
निदेशक,
माध्यमिक शिक्षा, हरियाणा
एवं
राज्य परियोजना निदेशक,
हरियाणा विद्यालय शिक्षा परियोजना परिषद

अशोक कुमार गर्ग
निदेशक,
मौलिक शिक्षा, हरियाणा

सतपाल शर्मा
अतिरिक्त निदेशक (प्रशासन)
माध्यमिक शिक्षा, हरियाणा

संपादक
डॉ. देवियानी सिंह

उप-संपादक
डॉ. प्रदीप राठौर

डिजाइन एवं प्रिंटिंग
हरियाणा संवाद सोसायटी

मूल्य: 15 रुपये, **वार्षिक:** 150 रुपये

Published & Printed by Sunita Devi on behalf of President, Shiksha Lok Society-cum-Director General Secondary Education, Haryana. Published from office of Director General Secondary Education, Haryana, Plot No. 1-B, Shiksha Sadan, Sector - 5, Panchkula.

Printed by M/ s. J.K. Offset Graphic Pvt. Ltd. at its printing press B-278, Okhla, Industrial Area, Phase -I,
New Delhi-110020

Editor: Dr. Deviyani Singh.

"परिस्थिति जैसी भी हो, उसे मन से स्वीकार करना सुख कहलाता है। इसके विपरीत उसको अस्वीकार करना दुःख है। अतः सुख-दुःख का आधार हमारे अंदर ही विद्यमान है।"

- अब हर बच्चा बनेगा-'निपुण' 5
- निपुण हरियाणा मिशनः मूलभूत साक्षरता और संख्या ज्ञान की ओर एक कदम 9
- हरियाणा में सुभीते से चल रहा है एफएलएन कार्यक्रम 11
- प्रवेश उत्सवः नव उमंग, नव तरंग 20
- किसी परिचय की मोहताज नहीं हैं शिक्षिका सुमन मलिक 24
- बाल-सारथी 26
- खेल-खेल में विज्ञान 28
- मैथस्टिक्स 30
- Assessments in NIPUN Bharat 32
- The Cost of Royalty 37
- Utilisation and Management of ICT Resources.. 38
- The Canvas of Emotions 41
- The Writing of a Research Paper 42
- Forget Past to Brighten your Future 44
- The Art of Taking Offence 45
- 'The Sound of Happiness!' 47
- Amazing Facts 48
- General Knowledge Quiz 49

मुखपृष्ठ छायाः डॉ. प्रदीप राठौर

पत्रिका में प्रकाशित लेखों में लेखकों की निजी राय हो सकती है। यह आवश्यक नहीं कि विभाग उनसे सहमत हो।

हम सब ने यह ठाना है हरियाणा 'निपुण' बनाना है

नई शिक्षा नीति-2020 में कक्षा-3 तक के सभी विद्यार्थियों में बुनियादी साक्षरता और संख्या-ज्ञान को वर्ष 2026-27 तक सुनिश्चित करने का लक्ष्य रखा गया है। इस बात की आवश्यकता इसलिए समझी गई, क्योंकि आँकड़ों के मुताबिक वर्तमान में देश में 5 करोड़ से अधिक बच्चों ने प्राथमिक स्तर पर बुनियादी साक्षरता और गणितीय समझ प्राप्त नहीं की है। नई शिक्षा नीति विद्यार्थियों से प्रत्यक्ष रूप से तभी जुड़ सकेगी जब उन्हें आधारभूत शिक्षा (लेखन, पठन, आधारभूत अंकगणित) प्राप्त हो। इसके लिए केंद्र सरकार ने राष्ट्रीय मिशन लॉन्च किया है जिसे नेशनल इनीशिएटिव फॉर प्रोफिशिएंसी इन लिविंग विद अंडरस्टैंडिंग एवं न्यूमैरेसी (निपुण भारत) नाम दिया है। मिशन का दृष्टिकोण देश में एक व्यापक विश्व स्तरीय वातावरण तैयार करना है, जिससे ग्रेड-3 के अंत तक बच्चे लिखने-पढ़ने एवं गणितीय समय की क्षमता प्राप्त कर सकें। इसी तर्ज पर प्रदेश में 'निपुण हरियाणा' मिशन चलाया जा रहा है। राष्ट्रीय स्तर पर भले ही इसके लक्ष्यों को अर्जित करने के लिए सत्र 2026-27 तक समय-सीमा रखी गई है, लेकिन हरियाणा ने इसे 2024-25 तक हासिल करने के लिए कमर कस ली है। कुछ नई पहलों के साथ प्रदेश में यह कार्यक्रम सुभीते से चल रहा है। आपकी चहेती पत्रिका 'शिक्षा सारथी' का प्रस्तुत अंक 'निपुण हरियाणा' पर केंद्रित है। आपकी प्रतिक्रियाओं की सदा की भाँति प्रतीक्षा रहेगी।

- संपादक

अब हर बच्चा बनेगा- 'निपुण'

डॉ. प्रदीप राठौर

आधारभूत शिक्षण बच्चे के भावी शिक्षण का आधार है। बोध के साथ पठन, लेखन और मूलभूत गणितीय प्रश्नों को हल करने के मूलभूत कौशलों को प्राप्त न कर पाने से, बच्चा कक्षा-3 के बाद की पाठ्यचर्या जटिलताओं के लिए तैयार नहीं हो पाता है। प्रारंभिक शिक्षण की महत्ता को देखते हुए, राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 में उल्लेख किया गया है कि 'हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता 2025 तक प्राथमिक और उससे आगे सार्वभौमिक मूलभूत साक्षरता और संख्या ज्ञान प्राप्त करने की होनी चाहिए। यदि हम सबसे पहले इस महत्त्वपूर्ण मूलभूत शिक्षण (अर्थात् प्रारंभिक स्तर पर पठन, लेखन और गणित कौशल) को प्राप्त नहीं कर पाते हैं, तो शेष नीति हमारे छात्रों की एक बड़ी संख्या के लिए मुख्य रूप से अप्रासंगिक हो जाएगी।' इस दिशा में, शिक्षा मंत्रालय (एमओई) द्वारा एक राष्ट्रीय मूलभूत साक्षरता एवं संख्या ज्ञान मिशन की प्राथमिकता पर स्थापना गई। मिशन अधिगम के पाँच क्षेत्रों- बच्चों को उनकी स्कूली शिक्षा के प्रारंभिक वर्षों में पहुँच प्रदान करना और उन्हें स्कूलों में बनाये रखना, शिक्षक क्षमता निर्माण, उच्च गुणवत्ता एवं विविधतापूर्ण छात्र एवं शिक्षण संसाधनों/अधिगम सामग्री का विकास, अधिगम परिणाम उपलब्धि में प्रत्येक छात्र की प्रगति को ट्रैक करना तथा बच्चों के पोषण और स्वास्थ्य (मानसिक स्वास्थ्य सहित) आदि पहलुओं के समाधान पर ध्यान दे रहा है।

मिशन का उद्देश्य एक सक्षम परिवेश का निर्माण करना है ताकि मूलभूत साक्षरता एवं संख्या ज्ञान के सार्वभौमिक अर्जन को सुनिश्चित किया जा सके, जिससे

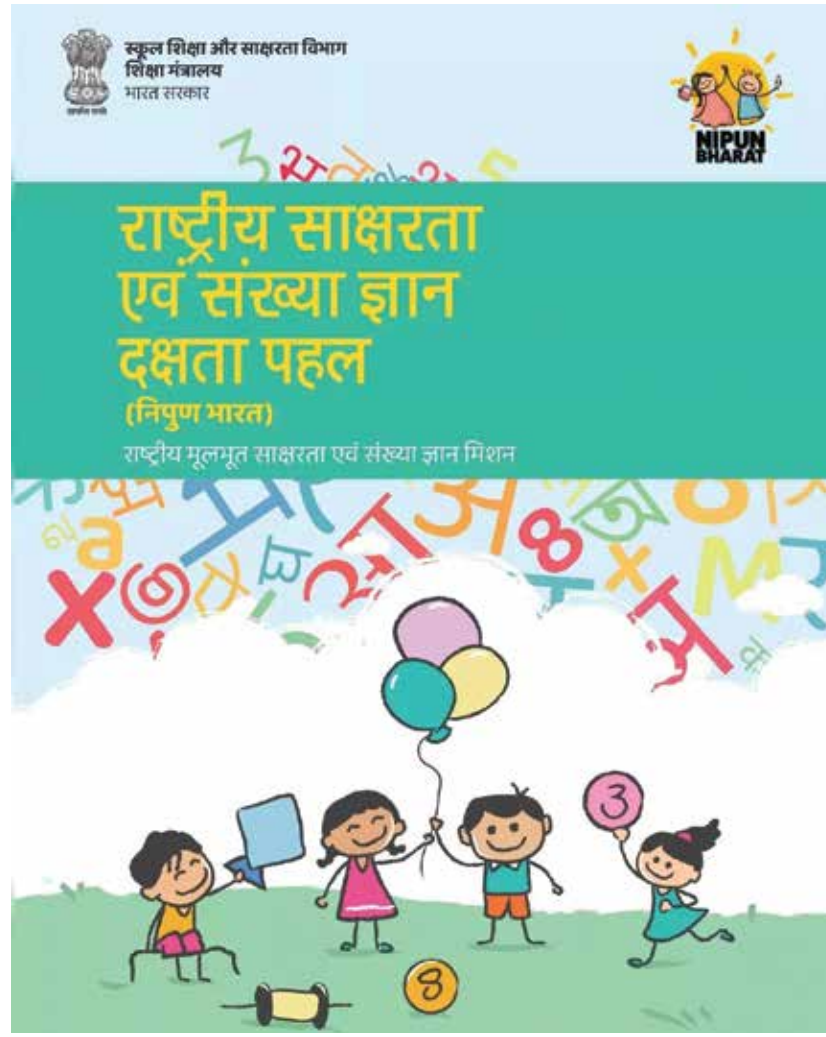

प्रत्येक बच्चा ग्रेड-तीन के बाद पठन, लेखन और संख्या ज्ञान कौशल की अपेक्षित शिक्षण-क्षमताओं को प्राप्त कर ले। मिशन 3 से 9 वर्ष की आयु के बच्चों की अधिगम-आवश्यकताओं को कवर कर रहा है। तदनुसार, अधिगम-अंतराल और इसके संभावित कारणों की पहचान और स्थानीय परिस्थितियों एवं देश की विविधता को ध्यान में रखते हुए, विभिन्न कार्यनीतियों के लिए राष्ट्रव्यापी पहल शुरू की गई है। इसके अलावा, प्री-स्कूल एवं कक्षा-। के बीच मजबूत संबंध स्थापित करने और सुचारु कक्षा-अंतरण के उद्देश्य से एनसीईआरटी द्वारा तैयार किए गए ईसीसीई पाठ्यचर्या फ्रेमवर्क को आँगनवाड़ी और प्री-प्राइमरी स्कूल दोनों द्वारा अपनाया जा

रहा है ताकि कक्षा-। में सुचारु कक्षा-अंतरण सुनिश्चित किया जा सके। इस प्रकार, अधिगम समग्र, एकीकृत, समावेशी, आनंदमय और बच्चों को आकर्षित करने वाला बन रहा है।

एफएलएन मिशन शिक्षा मंत्रालय द्वारा कार्यान्वित किया जा रहा है और सभी राज्यों और संघ राज्य क्षेत्रों में राष्ट्रीय-राज्य-जिला-खंड-स्कूल स्तर पर एक पाँच-स्तरीय कार्यान्वयन व्यवस्था की जा रही है। इस पर बल देने एवं इसे प्राथमिकता देने की दृष्टि से कार्यक्रम को मिशन पद्धति में कार्यान्वित किया जा रहा है। शिक्षा मंत्रालय का स्कूल शिक्षा एवं साक्षरता विभाग राष्ट्रीय स्तर पर कार्यान्वयन एजेंसी है और इसकी अध्यक्षता मिशन निदेशक कर रहे हैं। कार्यक्रम को दीर्घकालीन कार्यनीति एवं कार्य योजना को तैयार करते हुए, विशेष रूप से मिशन राज्यों एवं संघ राज्य क्षेत्रों द्वारा प्राप्त किए जाने वाले लक्ष्यों पर फोकस किया जा रहा है। मूलभूत साक्षरता एवं संख्या ज्ञान कार्यान्वयन संबंधी समग्र दिशा-निर्देश, राष्ट्रीय साक्षरता एवं संख्या ज्ञान पहल (निपुण भारत)-मूलभूत साक्षरता एवं संख्या ज्ञान के प्रमुख तकनीकी पहलुओं के साथ-साथ राष्ट्रीय, राज्य, जिला, खंड और स्कूल स्तर पर कार्यान्वयन व्यवस्था को प्रभावी ढंग से स्थापित करने के प्रशासनिक पहलुओं को कवर कर रहे हैं। इसे कार्यान्वयन भागीदारों और क्षेत्र-विशेषज्ञों के साथ बहुत से गहन परामर्शों के माध्यम से तैयार किया गया है। इसे लचीला और सहयोगी बनाने पर भी समुचित ध्यान दिया गया है। इस प्रकार, एफएलएन पर राष्ट्रीय मिशन को मौजूदा मुख्य स्रोत अवसंरचना के प्रयोग द्वारा सुदृढ़ बनाकर कार्यान्वित किया जा रहा है।

मूलभूत साक्षरता क्या है?

स्कूल शिक्षा प्रणाली की सर्वोच्च प्राथमिकता 2026-27 तक प्राथमिक स्तर पर मूलभूत साक्षरता एवं संख्या ज्ञान की सार्वभौमिक प्राप्ति करना है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 इस बात को भी उजागर करती है कि इस समय प्रारंभिक स्तर पर पढ़ रहे बच्चों की बड़ी संख्या

क्या रखे गए हैं मिशन के लक्ष्य-

बाल-वाटिका या आयु 5-6

मौखिक भाषा-

1. दोस्तों और शिक्षकों से बात करना
2. समझ के साथ तुकांत / कविताएँ गाना।

पढ़ना-

1. किताबों को देखना और चित्रों की मदद से कहानी पढ़ने का प्रयास करना
2. कुछ परिचित दोहराए गए शब्दों को पहचानने और इंगित करने की शुरुआत करना (दृष्टि शब्दों या खाद्य कंटेनर/ रैपर पर छपे शब्द)।
3. अक्षरों और संगत ध्वनियों को पहचानना।
4. कम से कम दो अक्षर वाले सरल शब्दों को पढ़ना

लेखन-

1. खेल के दौरान पहचान वाले अक्षरों को लिखने का प्रयास करना।
2. आत्म अभिव्यक्ति के लिए पेंसिल घसीटना या चित्र बनाना।
3. पेंसिल को ठीक से पकड़ना और पहचानने योग्य अक्षर बनाने के लिए उपयोग करना
4. अपने पहले नाम को पहचानना और लिखना

संख्यात्मक-

1. वस्तुओं की गिनती और 10 तक संख्याओं को सहबंधित करना
2. 10 तक के अंकों को पहचानना और पढ़ना।
3. वस्तुओं की संख्या के संदर्भ में दो समूहों की तुलना करना और अधिक / कम / बराबर आदि जैसे शब्दों का उपयोग करना।
4. एक क्रम में घटनाओं की संख्या / वस्तुओं / आकृतियों / घटनाओं को व्यवस्थित करना
5. वस्तुओं को उनकी अवलोकनीय विशेषताओं के आधार पर वर्गीकृत करना और वर्गीकरण के मानदंड का संचार करना
6. अपने चारों ओर कि विभिन्न वस्तुओं के संदर्भ में तुलनात्मक शब्दों का उपयोग करना, जैसे लंबे, सबसे लंबे, सबसे छोटे, से अधिक, हल्के आदि।

ने मूलभूत साक्षरता एवं संख्या ज्ञान को प्राप्त नहीं किया है। एनईपी- 2020 आगे इस बात को भी दोहराती है कि इस चिंता का तत्काल समाधान जरूरी है ताकि मूलभूत शिक्षण को स्कूलों में ही पूरा किया जा सके जिससे सभी छात्रों को गुणवत्तापरक शिक्षा-प्राप्ति के अवसर मिल सकें। सभी बच्चों के लिए मूलभूत साक्षरता और संख्या ज्ञान प्राप्त करना एक महत्त्वपूर्ण राष्ट्रीय मिशन बन जाना चाहिए। छात्रों को, उनके स्कूल, शिक्षकों, माता-पिता और समुदाय के साथ, सभी संभावित तरीकों से तत्काल सहायता देने और उन्हें प्रोत्साहित करने की जरूरत है ताकि सभी महत्त्वपूर्ण लक्ष्यों और मिशन को पूरा करने में मदद की जा सके, जो वस्तुतः पूरे भावी शिक्षण की नींव तैयार करते हैं। राष्ट्रीय विकास में मूलभूत कौशलों की महत्त्वपूर्ण भूमिका को ध्यान में रखते हुए, 'आत्मनिर्भर भारत' अभियान के तहत यह घोषणा की गई थी कि एक राष्ट्रीय मूलभूत साक्षरता एवं संख्या ज्ञान मिशन की शुरुआत की जाएगी ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि 2026-27 तक देश में प्रत्येक बच्चा कक्षा-3 में मूलभूत साक्षरता और संख्या ज्ञान को अनिवार्य रूप से प्राप्त कर ले। इस प्रयोजन के लिए, एक रोमांचक पाठ्यचर्या फ्रेमवर्क-बच्चों को अपनी ओर आकर्षित करने वाली अधिगम सामग्री- ऑनलाइन ऑफलाइन दोनों मोड में, शिक्षण परिणाम, अध्यापक क्षमता निर्माण और उनके

निपुण भारत सूची - कक्षा 1

विषय	भाषा
मौखिक भाषा	1. अपनी जरूरतों, परिवेश के बारे में दोस्तों और कक्षा शिक्षक के साथ बातचीत करना। 2. कक्षा में उपलब्ध प्रिंट सामग्री के बारे में बात करना। 3. कविताओं / गीतों को एक्शन के साथ सुनाना।
पढ़ना	1. सक्रिय तरीके से जोर से कहानी कहने के सत्र के दौरान भाग लेना तथा कहानी सत्र के दौरान और बाद में सवालों का जवाब देना; कठपुतलियों और अन्य सामग्रियों के साथ परिचित कहानी का अभिनय करना। 2. आविष्कृत वर्तनी के साथ शब्द लिखने के लिए ध्वनि प्रतीक का उपयोग करना। 3. आयु-उपयुक्त अज्ञात पाठ में कम से कम 4-5 सरल शब्द सहित छोटे-छोटे वाक्य पढ़ना।
लेखन	1. परिचित संदर्भों (कहानी/ कविता/ आस पास के वातावरण संबंधी प्रिंट आदि) में प्रयोग होने वाले शब्दों में मात्राओं के साथ परिचित होना। 2. लेखन, ड्राइंग, और/या चीजों को अर्थ देना और अपने कार्यपत्र, बधाई सन्देश, चित्रों, आदि पर अपना नाम लिखना और ऐसे चित्र बनाना जो पहचानने योग्य हों या अन्य लोगों से मेल खाते हों।
विषय	**गणित**
संख्यात्मक ज्ञान	1. 20 तक वस्तुओं की गिनती 2. 99 तक की संख्याएं पढ़ना और लिखना 3. दैनिक जीवन स्थितियों में 9 तक संख्याओं के जोड़ और घटाव का उपयोग करना 4. अपने चारों ओर 3डी आकृतियों (ठोस आकृतियों) के 4 भौतिक गुणों का अवलोकन और वर्णन करना जैसे गोल/ समतल सतह, कोनों और किनारों की संख्या आदि 5. गैर-मानक, गैर-समान इकाइयों जैसे हाथ की लम्बाई, पैर की लम्बाई, उंगलियों आदि का उपयोग करके लम्बाई का अनुमान लगाना और पुष्टि करना और गैर-मानक वर्दी इकाइयों जैसे कप, चम्मच, मग आदि का उपयोग करके क्षमता (capacity) का अनुमान लगाना 6. आकारों और संख्याओं का उपयोग करके छोटी कविताओं और कहानियों का निर्माण और पाठ करना।

उपरोक्त सूची में दिए गए लक्ष्यों में विद्यार्थियों को निपुण बनाने हेतु स्किल पासबुक में दी गयी दक्षताओं को आधार बनाएं।

विद्यालय शिक्षा विभाग, हरियाणा
निपुण हरियाणा प्रकोष्ठ, छठा तल, शिक्षा सदन

Nipunharyana nipunharyanamission nipun_haryana_mission

निपुण भारत सूची - कक्षा 2

विषय	भाषा
मौखिक भाषा	1. कक्षा में उपलब्ध प्रिंट सामग्री के बारे में बात करना। 2. प्रश्न पूछने के लिए बातचीतमें में संलग्न होना और दूसरों को सुनना। 3. गीत / कविताएं सुनाना। 4. कहानियों / कविताओं / प्रिंट आदि में होने वाले परिचित शब्दों को दोहराना।
पढ़ना	1. बच्चों के साहित्य / पाठ्य पुस्तकों से कहानियों को पढ़ना / वर्णन करना / फिर से बताना। 2. किसी दिए गए शब्द के अक्षरों से नए शब्द बनाना। 3 आयु उपयुक्त अज्ञात पाठ से उचित गति और स्पष्टता के साथ सरल शब्दों के 8-10 वाक्यों को पढ़ना (लगभग 45-60 शब्द प्रति मिनट सही ढंग से)
लेखन	1. खुद को व्यक्त करने के लिए छोटे / सरल वाक्यों को सही ढंग से लिखना। 2. नामकरण शब्द, क्रिया शब्दों (action words) और विराम चिन्हों को पहचानना।
विषय	**गणित**
संख्यात्मक ज्ञान	1. 999 तक की संख्याएं पढ़ना और लिखना। 2. 99 तक की संख्याओं को जोड़ना और घटाना, दैनिक जीवन की स्थितियों में 99 तक की वस्तुओं का योग। 3. गुणा और जोड़ को समान वितरण / बंटवारे के रूप में गुणा करना और 2, 3, 4 के पहाड़ों का निर्माण करना। 4. गैर-मानक वर्दी इकाइयों जैसे रॉड, पेंसिल, धागा, कप, चम्मच, मग आदि का उपयोग करके लंबाई / दूरी / क्षमता (capacity) का अनुमान लगाना और मापना और तराजू का उपयोग करके वजन की तुलना करना। 5. आयत, त्रिभुज, वृत्त, अंडाकार आदि जैसे 2D आकृतियों की पहचान करना और उनका वर्णन करना। 6. दूर / पास, अंदर / बाहर, ऊपर / नीचे, दाएं / बाएं, आगे / पीछे, आदि जैसी स्थानिक शब्दावली का उपयोग करना। 7. संख्याओं और आकृतियों का उपयोग करके सरल पहेलियों को बनाना और हल करना।

उपरोक्त सूची में दिए गए लक्ष्यों में विद्यार्थियों को निपुण बनाने हेतु स्किल पासबुक में दी गयी दक्षताओं को आधार बनाएं।

विद्यालय शिक्षा विभाग, हरियाणा
निपुण हरियाणा प्रकोष्ठ, छठा तल, शिक्षा सदन

Nipunharyana nipunharyanamission nipun_haryana_mission

NIPUN HARYANA

निपुण भारत सूची - कक्षा 2	
विषय	भाषा
मौखिक भाषा	1. कक्षा में उपलब्ध प्रिंट सामग्री के बारे में बात करना। 2. प्रश्न पूछने के लिए बातचीत में संलग्न होना और दूसरों को सुनना। 3. गीत / कविताएं सुनाना। 4. कहानियों / कविताओं / प्रिंट आदि में होने वाले परिचित शब्दों को दोहराना।
पढ़ना	1. बच्चों के साहित्य / पाठ्य पुस्तकों से कहानियों को पढ़ना / वर्णन करना / फिर से बताना। 2. किसी दिए गए शब्द के अक्षरों से नए शब्द बनाना। 3 आयु उपयुक्त अज्ञात पाठ से उचित गति और स्पष्टता के साथ सरल शब्दों के 8-10 वाक्यों को पढ़ना (लगभग 45-60 शब्द प्रति मिनट सही ढंग से)
लेखन	1. खुद को व्यक्त करने के लिए छोटे / सरल वाक्यों को सही ढंग से लिखना। 2. नामकरण शब्द, क्रिया शब्दों (action words) और विराम चिह्नों को पहचानना।
विषय	गणित
संख्यात्मक ज्ञान	1. 999 तक की संख्याएं पढ़ना और लिखना। 2. 99 तक की संख्याओं को जोड़ना और घटाना, दैनिक जीवन की स्थितियों में 99 तक की वस्तुओं का योग। 3. गुणा और जोड़ को समान वितरण / बंटवारे के रूप में गुणा करना और 2, 3, 4 के पहाड़ों का निर्माण करना। 4. गैर-मानक वहीं इकाइयों जैसे रॉड, पेंसिल, धागा, कप, चम्मच, मग आदि का उपयोग करके लंबाई / दूरी / क्षमता (capacity) का अनुमान लगाना और मापना और तराजू का उपयोग करके वजन की तुलना करना। 5. आयत, त्रिभुज, वृत्त, अंडाकार आदि जैसी 2D आकृतियों की पहचान करना और उनका वर्णन करना। 6. दूर / पास, अंदर / बाहर, ऊपर / नीचे, दाएं / बाएं, आगे / पीछे, आदि जैसी स्थानिक शब्दावली का उपयोग करना। 7. संख्याओं और आकृतियों का उपयोग करके सरल पहेलियों को बनाना और हल करना।

उपरोक्त सूची में दिए गए लक्ष्यों में विद्यार्थियों को निपुण बनाने हेतु स्किल पासबुक में दी गयी दक्षताओं को आधार बनाएँ।

विद्यालय शिक्षा विभाग, हरियाणा
निपुण हरियाणा प्रकोष्ठ, छठा तल, शिक्षा सदन

Nipunharyana nipunharyanamission nipun_haryana_mission

मापन सूचकांक, मूल्यांकन विधि आदि को तैयार किया गया ताकि इन्हें चरणबद्ध ढंग से आगे बढ़ाया जा सके। इस संदर्भ में, शिक्षा मंत्रालय द्वारा 'राष्ट्रीय साक्षरता एवं संख्या ज्ञान दक्षता पहल (निपुण भारत)' नामक राष्ट्रीय मूलभूत साक्षरता एवं संख्या ज्ञान मिशन की प्राथमिकता के साथ स्थापना की गई। राष्ट्रीय मिशन राज्यों संघ व राज्य क्षेत्रों के लिए प्राथमिकताएँ और कार्यान्वित की जाने वाली मदों को निर्धारित करता है ताकि प्रत्येक बच्चे के लिए कक्षा-3 तक मूलभूत साक्षरता एवं संख्या ज्ञान में दक्षता के लक्ष्य को प्राप्त किया जा सके। इस मिशन को केंद्र प्रायोजित योजना-समग्र शिक्षा के तत्त्वावधान में स्थापित किया जा रहा है, जो स्कूल शिक्षा के लिए एकीकृत योजना है तथा यह प्री-स्कूल से वरिष्ठ माध्यमिक स्तर को कवर करती है। यह योजना प्री-स्कूल से कक्षा-3 सहित 3 से 9 वर्ष के बच्चों पर ध्यान केंद्रित करती है। उन कक्षा-4 और कक्षा-5 के बच्चों, जिन्होंने मूलभूत कौशलों को प्राप्त नहीं किया है, को आयु अनुरूप और अनुपूरक कक्षा अधिगम सामग्री देकर आवश्यक दक्षता हासिल करने का लक्ष्य है।

drpradeeprathore@gmail.com

निपुण हरियाणा मिशनः मूलभूत साक्षरता और संख्या ज्ञान की ओर एक कदम

प्रमोद कुमार

बच्चे की शिक्षा की नींव शुरुआती वर्षों में ही रखी जाती है इसलिए यह सुनिश्चित करना अनिवार्य है कि कक्षा 1 से 3 तक के बच्चों की साक्षरता और संख्या ज्ञान की नींव मज़बूत हो। यह कार्य उन्हें नवीन दक्षता को आसानी से प्राप्त करने और उन्हें उच्च शिक्षा तथा भविष्य के रोज़गार के अवसरों के लिए तैयार करने में सक्षम बनाएगा।

विद्यालय शिक्षा विभाग ने निपुण हरियाणा मिशन को बल देने के लिए अनेक पहल की हैं। ऐसी ही एक पहल कक्षा 1 से 3 के छात्रों के लिए दक्षता-आधारित कार्यपुस्तिकाओं की रचना है। ये कार्यपुस्तिकाएँ छात्रों में

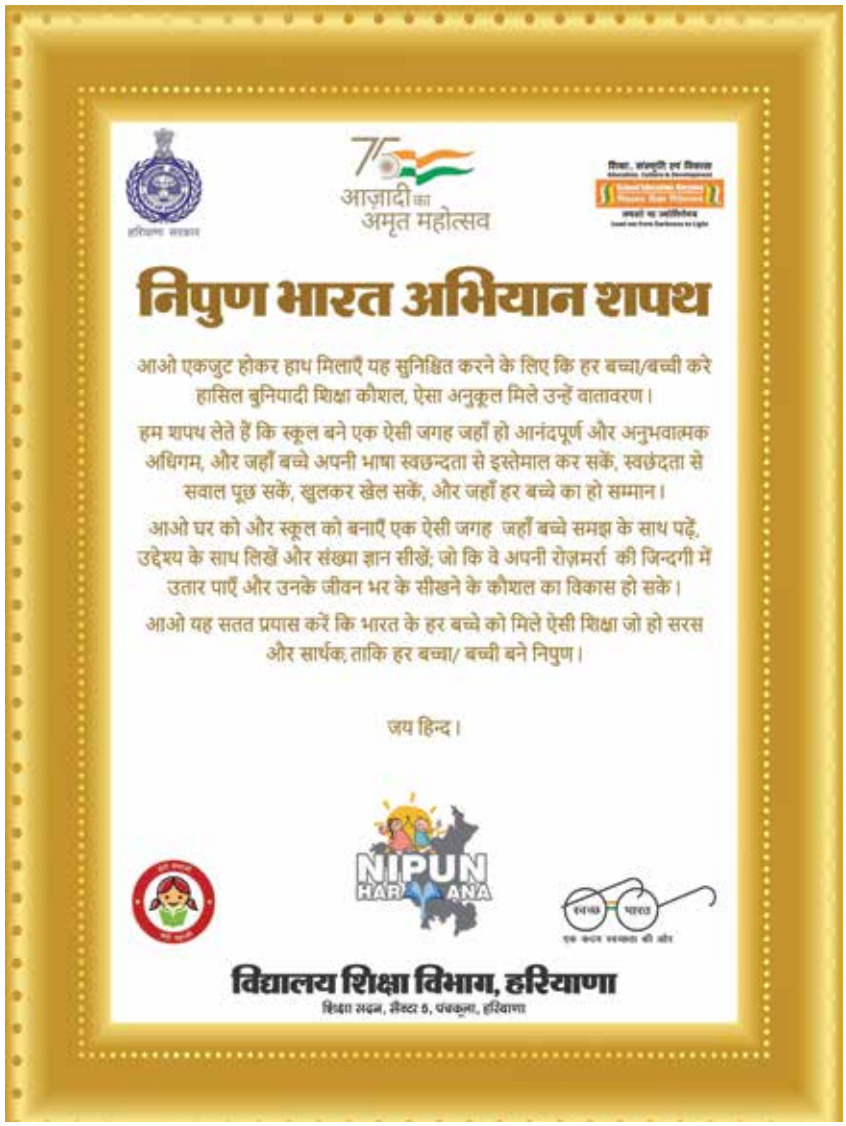

निपुण हरियाणा मिशन, हरियाणा सरकार द्वारा सत्र 2024-25 तक कक्षा-1 से 3 तक के प्रत्येक बच्चे की मूलभूत साक्षरता और संख्या ज्ञान की एक मज़बूत नींव सुनिश्चित करने की एक साहसिक और महत्त्वाकांक्षी पहल है। इस मिशन का शुभारंभ 30 जुलाई, 2021 को माननीय मुख्यमंत्री श्री मनोहर लाल द्वारा किया गया था। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी)-2020 के तहत, इस मिशन का उद्देश्य राज्य के प्रत्येक बच्चे को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त करने का अवसर प्रदान करना है। हरियाणा एनईपी-2020 के अंतर्गत मूलभूत शिक्षा के उद्देश्यों को पूरा करने पर समुचित बल दे रहा है। हम यह सुनिश्चित करने के लिए प्रतिबद्ध हैं कि हरियाणा में प्रत्येक बच्चा निपुण हरियाणा मिशन के माध्यम से मूलभूत साक्षरता और संख्या ज्ञान में आवश्यक कक्षा-स्तरीय दक्षता प्राप्त करे।

-डॉ. अंशज सिंह
निदेशक माध्यमिक शिक्षा
एवं राज्य परियोजना निदेशक, हरियाणा

सक्रिय लेखन-पठन को बढ़ावा देने और उनकी साक्षरता एवं संख्यात्मक कौशल को विकसित करने के प्रति महत्त्वपूर्ण कदम हैं। ये कार्यपुस्तिकाएँ राज्य पाठ्यक्रम के अनुरूप हैं और शिक्षा क्षेत्र के विशेषज्ञों के सहयोग से तैयार की गई हैं। शिक्षकों को उनके शिक्षण शैली में सहायता करने के लिए विभाग ने शिक्षक संदर्शिका तैयार कराई है। शिक्षक संदर्शिका शिक्षकों को शिक्षण और सीखने के लिए एक संरचित दृष्टिकोण प्रदान करती है। साथ ही यह उन्हें एक उत्सुक और आकर्षक कक्षा वातावरण बनाने में मदद करती है। संदर्शिकाओं में पाठ-योजनाएँ, शिक्षण रणनीतियाँ और मूल्यांकन उपकरण शामिल हैं जो शिक्षकों को अपने छात्रों की दक्षताओं एवं कमजोरियों की पहचान करने और उन्हें आवश्यक सहायता प्रदान करने में मदद करते हैं।

शिक्षण और सीखने की प्रक्रिया को प्रभावी बनाने के लिए, विभाग ने राज्य के सभी प्राथमिक शिक्षकों (पीआरटी) को टैबलेट प्रदान किए हैं। सभी टैबलेट, शिक्षण-अधिगम-सामग्री (टीएलएम) एवं अन्य शैक्षणिक संसाधनों से शुरुआत से ही लेस होते हैं, जिससे शिक्षकों को एक गतिशील और संवादात्मक वातावरण बनाने में मदद मिलती है। टैबलेट के माध्यम से सभी शिक्षक अपने छात्रों की प्रगति को बारीकी से देख उन्हें आवश्यकता अनुसार व्यक्तिगत प्रतिक्रिया एवं समर्थन भी प्रदान कर सकेंगे ।

बच्चों को मनोरंजक तरीके से सीखने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए विभाग ने बालगीत, गिनती और पहाड़े जैसी विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया है। ये प्रतियोगिताएँ बच्चों को साक्षरता और संख्या ज्ञान में अपने कौशल विकसित करने में मदद करती हैं। साथ ही स्वस्थ प्रतिस्पर्धा और सामूहिक कार्य की भावना को भी बढ़ावा देती हैं।

प्राथमिक शिक्षकों के कौशल विकास पर भी विशेष ध्यान दिया गया है। राज्य के सभी 36,000 प्राथमिक शिक्षकों के लिए तीन दिवसीय शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसके तहत हिंदी, गणित और अंग्रेज़ी के शिक्षण में नवीन शैक्षणिक विधियों का प्रशिक्षण दिया गया। आगामी सत्र में शिक्षकों को अपने छात्रों के लिए एक उत्सुक और तनाव मुक्त वातावरण बनाने के लिए मिश्रित प्रशिक्षण कार्यक्रमों द्वारा सशक्त किया जाएगा।

सूचना, शिक्षा और संचार (आईईसी) मिशन का एक महत्त्वपूर्ण अंग है। शिक्षक, माता-पिता, शैक्षणिक सलाहकार, जिला एवं खंड शिक्षा अधिकारी और आम जनता सहित सभी हितधारकों के लिए एक आईईसी अभियान विकसित किया गया है, जिसमे इंफोग्राफिक्स, माता-पिता से संचार सामग्री, सोशल मीडिया, रेडियो, प्रिंट और टीवी जैसे चैनलों का लाभ उठाया जा रहा है। स्कूल तत्परता मेला, पुस्तक मेला और पाठन अभ्यास सहित विभिन्न समुदाय-स्तरीय कार्यक्रम भी आयोजित किए जा रहे हैं।

पढ़ने को बढ़ावा देने और बच्चों के साक्षरता कौशल को विकसित करने के लिए, विभाग ने निपुण कॉमिक 'गोपू बना निपुण' तैयार किया है। कॉमिक बुक की कहानियों को बच्चों में पढ़ने को बढ़ावा और मूलभूत दक्षताओं को विकसित करने के लिए तैयार किया गया है। कॉमिक बुक की रचना सभी उम्र के बच्चों की रुचि को मध्यनज़र रखते हुए की गई। यह हिंदी और अंग्रेज़ी दोनों में उपलब्ध है।

छात्रों के माता-पिता मिशन के प्रमुख हितधारक हैं और उनकी भागीदारी से बच्चों के सीखने में सार्थक सुधार हो सकता है। हरियाणा ने अपने बच्चे की शिक्षा के बारे में माता-पिता के साथ दैनिक बातचीत सुनिश्चित करने के प्रावधान बनाए हैं। व्हाट्सएप समूहों के माध्यम से, माता-पिता को कक्षा की दैनिक गतिविधियों और उनके बच्चों को सिखाई गई दक्षताओं के बारे में जानकारी साझा की जाती है। उन्हें अपने बच्चे की शिक्षा में नियमित रुचि लेने और घर-आधारित गतिविधियों में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है।

प्रौद्योगिकी इन सभी पहलों के कार्यान्वयन और निगरानी में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाएगी। निपुण हरियाणा मिशन के लिए सामग्री, सूचना, निगरानी, मूल्यांकन और निर्णय लेने को कुशल और प्रभावी बनाने के लिए प्रौद्योगिकी के व्यापक एकीकरण की योजना बनाई गई है। इस योजना में एक एफएलएन मोबाइल एप्लिकेशन, एक वेब एप्लिकेशन, निपुण हरियाणा मिशन वेबसाइट और अन्य उपकरण का विकास शामिल है। निपुण मोबाइल एप्लिकेशन एक बहु-हितधारक समाधान है, जो शिक्षकों, अभिभावकों और अधिकारियों सहित सभी प्रमुख हितधारकों को एक साथ एक मंच पर लाता है। प्रत्येक हितधारक के पास अपनी भूमिकाओं और जिम्मेदारियों के अनुसार एप्लिकेशन में सूचना और मिशन के महत्त्वपूर्ण मापदंड की जानकारी साझा की जाएगी।

निपुण हरियाणा मिशन के तहत प्रदान की जाने वाली सामग्री

क्र.सं.	हितधारक	एफएलएन सामग्री
1.	प्राथमिक शिक्षक	टैबलेट (सिम के साथ) और मुफ्त दैनिक 2 जीबी डेटा
2.	ग्रेड 1-3 के छात्र	हिंदी, गणित और अंग्रेजी के लिए कार्यपुस्तिका
3.	ग्रेड 1-3 को अध्यापन कराने वाले प्राथमिक शिक्षक	हिंदी, गणित और अंग्रेजी के लिए ग्रेड 1-3 की शिक्षक गाइड
4.	प्राथमिक शिक्षक	एफएलएन पुस्तिका (निपुण भारत की पृष्ठभूमि, विद्याप्रवेश, शिक्षकों, स्कूलों और अभिभावकों की भूमिका के साथ)
5.	प्राथमिक विद्यालय	संपर्क अंग्रेजी और संपर्क गणित किट
6.	प्राथमिक विद्यालय	संपर्क एस-बॉक्स, संपर्क दीदी बॉक्स
7.	प्राथमिक शिक्षक और छात्र	संपर्क स्मार्टशाला ऐप
8.	प्राथमिक विद्यालय	हिंदी टीएलएम सहित वार्तालाप-चार्ट, मात्रा-कार्ड, वर्ण-कार्ड, पोस्टर आदि
9.	प्राथमिक विद्यालय	निपुण लक्ष्य पोस्टर और निपुण-शपथ

कार्यक्रम अधिकारी
माध्यमिक शिक्षा विभाग, हरियाणा

हरियाणा में सुभीते से चल रहा है एफएलएन कार्यक्रम

जैसा कि हम सभी जानते हैं कि शिक्षा सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक परिवर्तन का सबसे महत्त्वपूर्ण साधन है और एक समतामूलक समाज के निर्माण का प्रमुख साधन है। प्रासंगिक ज्ञान, दृष्टिकोण और कौशल से लैस एक सुशिक्षित आबादी 21वीं सदी में आर्थिक और सामाजिक विकास के लिए आवश्यक है। एनईपी-2020 इस सिद्धांत पर आधारित है कि शिक्षा को न केवल संज्ञानात्मक क्षमताओं का विकास करना चाहिए, बल्कि साक्षरता और बुनियादी क्षमताओं का भी विकास करना चाहिए। कोविड-19 महामारी ने शिक्षा क्षेत्र के लिए अभूतपूर्व परिवर्तन प्रस्तुत किया है क्योंकि लगभग दो शैक्षणिक वर्षों तक स्कूल नहीं खुल सके। इस कारण शिक्षण काफी प्रभावित हुआ।

सीखने के नुकसान की पूर्ति करने के लिए सरकार द्वारा विभिन्न कदम उठाए गए हैं जिनमें निपुण भारत मिशन भी शामिल है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी-2020) की सिफारिश के साथ मूलभूत साक्षरता और संख्यात्मकता को संरेखित किया गया है। अगर हम एनईपी-2020 की सिफारिशों की बात करें तो इसमें शामिल हैं-

सभी बच्चों के लिए बाल वाटिका और टीएलएम का एक वर्ष का परिचय।

- फाउंडेशन साक्षरता और संख्यात्मकता का राष्ट्रीय मिशन
- समग्र प्रगति कार्ड (एचपीसी)
- शिक्षकों की क्षमता निर्माण
- बिना बैग के दिन और इंटर्नशिप
- ब्लॉक स्तर पर संसाधन केंद्र
- एससीईआरटी में मूल्यांकन प्रकोष्ठों का समर्थन
- स्मार्ट कक्षाओं का प्रावधान

एनईपी-2020 के उद्देश्यों और सिफारिशों के आधार पर, भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय द्वारा निपुण भारत मिशन नाम से एक राष्ट्रीय मिशन की स्थापना की गई है, जहाँ NIPUN का अर्थ समझ और संख्यात्मकता के साथ पढ़ने में प्रवीणता के लिए राष्ट्रीय पहल है। जैसा कि नाम से पता चलता है, यह एक राष्ट्रीय मिशन है, जिसे अखिल भारतीय स्तर पर सभी राज्यों द्वारा अपनाया गया है। इस मिशन के तहत स्कूलों में साक्षरता और अंक ज्ञान को आधार बनाने के लिए अनुकूल माहौल बनाने पर विशेष जोर दिया जा रहा है। शिक्षकों, माता-पिता और सलाहकारों के संयुक्त प्रयास के रूप में सभी को यह सुनिश्चित करना होगा कि हर एक बच्चा तीसरी कक्षा के बाद से पढ़ने, लिखने और संख्यात्मक कौशल की न्यूनतम अपेक्षित सीखने की क्षमता हासिल कर ले। 2026-27 तक देश भर में इस मिशन के दौरान कुछ दीर्घकालिक लक्ष्यों पर काम किया जाएगा। इस मिशन के चार मुख्य पहलुओं में शामिल हैं:

1. समझ के साथ पढ़ना- यह इस मिशन का प्रमुख और बुनियादी पहलू है। क्योंकि जब कोई बच्चा किसी लिखित पाठ का अर्थ समझने लगता है तो यह माना जाता है कि वह समझ के साथ पढ़ रहा है। इस कौशल के लिए ध्वन्यात्मक जागरूकता, चरित्र पहचान, डिकोडिंग और पढ़ने जैसी कई विशेषताओं पर व्यवस्थित रूप से काम किया जा रहा है।

2. न्यूमेरसी (बेसिक मैथमैटिकल ऑपरेशंस)- ऐसा माना जाता है कि बेसिक मैथमेटिक्स में किसी भी ऑपरेशंस को समझना एक महत्त्वपूर्ण पहलू है। जोड़, घटाव, गुणा और भाग जो हमारे दैनिक जीवन में व्यापक रूप से उपयोग किए जाते हैं, केवल संख्याओं के अमूर्त उपयोग नहीं हैं। इन संक्रियाओं का उपयोग हमारे जीवन की दैनिक दिनचर्या में सरल समस्याओं का विश्लेषण, वर्णन और समाधान करने के लिए किया जा सकता है।

3. लेखन- जब किसी छात्र में पढ़ने की क्षमता का विकास हो जाता है तो वह लेखन कौशल की ओर अग्रसर होता है, जो मूलभूत साक्षरता का प्रमुख लक्ष्य है। समझ के साथ लेखन के इस कौशल को विकसित करने के लिए, एक बच्चे को आकस्मिक लेखन, दृश्य लेखन, साझा लेखन और रचनात्मक लेखन के चरणों से गुज़रना पड़ता है।

4. जीवन का बुनियादी कौशल- निपुण भारत मिशन का सबसे अच्छा हिस्सा यह है कि न केवल बुनियादी

साक्षरता और संख्यात्मकता पर ध्यान दिया जाता है, बल्कि इसे स्कूल में सभी बच्चों को ऐसा वातावरण प्रदान करने के लिए डिज़ाइन किया गया है ताकि वे जीने के लिए जीवन के कुछ बुनियादी कौशलों का ज्ञान प्राप्त कर सकें। इसलिए इस मिशन में गतिविधियों पर आधारित शिक्षा शामिल है जो बच्चे को सामाजिक और भावनात्मक रूप से मज़बूत बनाने में मदद करेगी।

इन लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए, हरियाणा सरकार ने निपुण भारत मिशन की सिफारिशों के बाद निपुण हरियाणा मिशन को लागू करने वाले पहले राज्य के रूप में खुद को निर्धारित किया है। सभी ज़िले जोर-शोर से इस मिशन को सफल बनाने में जुटे हुए हैं। कुछ जिलों द्वारा इस दिशा में चलाई गई महत्त्वपूर्ण पहलें हम तक पहुँची हैं, उन्हें इस लेख में स्थान दिया जा रहा है।

1. जिला सोनीपत

जिला सोनीपत में, पहले चरण में 43 बैचों में 1707 शिक्षकों को प्रशिक्षण दिया गया। एफएलएन प्रशिक्षण के दूसरे चरण में 1916 शिक्षकों (1735 पीआरटी जिला सोनीपत और 181 अन्य जिलों से) ने 47 बैचों में प्रशिक्षण लिया। और एफएलएन प्रशिक्षण के तीसरे चरण में जिला सोनीपत के सभी 7 खंडों में 1668 पीआरटी को 43 बैचों में प्रशिक्षण लिया। अलग-अलग चरणों में पीआरटी के सफल प्रशिक्षण के बाद, सोनीपत जिले में निम्नलिखित पहलुओं को हासिल किया है-

- अधिकांश प्राथमिक विद्यालयों में प्रिंट समृद्ध वातावरण।
- जिले में मेहनती शिक्षकों द्वारा कम लागत या शून्य लागत टीएलएम के साथ शिक्षण।
- कक्षा कक्षों में आईसीटी सक्षम तकनीकों का उपयोग।
- सभी पीआरटी को टैब का वितरण।
- जिला, ब्लॉक और क्लस्टर स्तरों पर क्रमशः जिले में निगरानी प्रक्रिया की समीक्षा करने के लिए डीपीआईयू, बीपीआईयू और सीपीआईयू का गठन।
- सभी स्कूलों में शिक्षकों को उपलब्ध कराई गई विभिन्न किटों के उपयोग से शिक्षण प्रक्रिया को आसान बनाया गया।

जैसा कि यह शिक्षकों, मेंटर्स, माता-पिता और पूरे समुदाय का एक संयुक्त प्रयास है, पूरा विश्वास है कि हम निपुण हरियाणा मिशन के लिए निर्धारित सभी लक्ष्यों को प्राप्त कर लेंगे। **(जिला समन्वयक एफएलएन, सोनीपत)**

2. जिला पलवल

मिशन के तहत जिला पलवल यह सुनिश्चित करने के लिए विभिन्न शैक्षणिक पहल कर रहा है कि ग्रेड 1 से 3 के सभी छात्र ग्रेड-स्तरीय एफएलएन सक्षम बनें। तमाम चुनौतियों के बावजूद पूरे साल सभी वरिष्ठ अधिकारी और

शिक्षक इसे सफल बनाने के लिए जी-जान से जुटे रहे। शिक्षक व्यावसायिक विकास (टीपीडी) या हमारे प्राथमिक शिक्षकों की क्षमता निर्माण पर विशेष ध्यान दिया गया है। सभी प्राथमिक शिक्षकों के लिए जिले में तीन चरण में शिक्षक प्रशिक्षण आयोजित किया गया है। वे निपुण भारत और निपुण हरियाणा मिशन को सफल बनाने के लिए जी-जान से जुटे हैं और हिंदी, गणित और अंग्रेज़ी के शिक्षण में अभिनव शैक्षणिक हस्तक्षेपों की शुरुआत कर रहे हैं। मिशन की सफलता के लिए जिला पलवल में अब तक किए गए सकारात्मक कदम और प्रयास इस प्रकार हैं-

1. नियमित मूल्यांकनः शिक्षक ग्रेड-स्तर-2 की दक्षताओं पर छात्रों का आकलन करने के लिए राज्य की कौशल पासबुक का उपयोग कर रहे हैं। कार्यपुस्तिकाओं के पीछे साप्ताहिक मूल्यांकन एवं कौशल पासबुक के माध्यम से शिक्षकों द्वारा विद्यार्थियों का मूल्यांकन किया जाता है।

2. एफएलएन प्रतियोगिताओं का आयोजनः निपुण हरियाणा मिशन के तहत जिला पलवल में टेबल प्रतियोगिता व बाल गीत प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस दौरान छात्रों के साथ-साथ शिक्षकों की भी

भागीदारी रही। टेबल प्रतियोगिता ने बच्चों के बौद्धिक विकास में मदद की, जबकि बच्चों के गीत ने शिक्षकों के बीच रचनात्मकता और उत्साही शिक्षण की भावना विकसित की।

3. स्कूलों और कक्षाओं को प्रिंट रिच बनानाः निपुण हरियाणा मिशन के अनुपालन में पलवल जिले के सभी स्कूलों में कक्षाओं को प्रिंट समृद्ध बनाने का प्रयास किया जा रहा है। इस दौरान कई स्कूलों का प्रयास सराहनीय रहा।

4. क्लास रूम में टीएलएम, टीएलई और गतिविधि आधारित शिक्षाशास्त्र का उपयोगः जिला पलवल में, सरकारी स्कूलों में आनंदपूर्ण सीखने के लिए उपयुक्त टीएलएम, टीएलई और गतिविधि आधारित शिक्षण कराया जा रहा है। सभी प्राथमिक शिक्षकों को टीएलएम, टीएलई, लो कॉस्ट टीएलएम मेकिंग का उपयोग करने के लिए प्रशिक्षित किया गया था, शिक्षकों को उनके शिक्षण की योजना बनाने और कक्षा प्रबंधन और समय-सारिणी प्रबंधन की सर्वोत्तम प्रथाओं को शामिल करने में मदद करने के लिए पाठ-योजना और शिक्षक-मार्गदर्शिकाएँ प्रदान की गई हैं। योग्यता-आधारित सीखने की दिशा में बदलाव को ध्यान में रखते हुए सभी सामग्री प्रदान की गई है। योग्यता आधारित शिक्षा छात्र सीखने के परिणामों (एलओ) पर केंद्रित है। यह पाया गया है कि कई शिक्षक कम लागत वाले टीएलएम, चार्ट बनाते हैं और उन्हें बहुत ही सुंदर तरीके से कक्षा में उपयोग करते हैं।

5. निपुण बाल राम-लीलाः निपुण हरियाणा मिशन के तहत जिला पलवल के 4 खंडों में बाल राम-लीला का आयोजन किया गया, जो विद्यार्थियों के लिए मनोरंजक व ज्ञानवर्धक रही।

6. मेंटर्स द्वारा शिक्षकों की सहायताः निपुण हरियाणा मिशन को सफल बनाने में मेंटर्स की अहम भूमिका है। जिला पलवल के सभी मेंटर्स (एबीआरसी, बीआरपी) द्वारा शिक्षकों को प्रेरित करने और उन्हें अकादमिक सहायता प्रदान करने के लिए बहुत ही सकारात्मक प्रयास किए जा रहे हैं।

7. आईईसी का उपयोगः आईईसी (सूचना, शिक्षा, संचार) मिशन का एक अन्य महत्त्वपूर्ण पहलू है। शिक्षकों, माता-पिता, अकादमिक सलाहकारों, शिक्षा अधिकारियों, जैसे- डीईईओ, बीईओ, और आम जनता सहित सभी हितधारकों को ध्यान में रखते हुए एक आईईसी अभियान विकसित किया गया है, जिसमें इन्फोग्राफिक्स, स्कूल टू पेयरेंट कम्युनिकेशन, पत्र, मीडिया, रेडियो, प्रिंट और टीवी सोशल मीडिया जैसे चैनल शामिल हैं। स्कूल तैयारी मेलों, पुस्तक मेलों, वाचन आयोजनों, गुणोत्सव आदि का भी आयोजन किया जा रहा है।

8. प्रौद्योगिकियों का उपयोगः प्रौद्योगिकी इन सभी पहलों के कार्यान्वयन और निगरानी में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। निपुण हरियाणा मिशन के लिए, पलवल जिले ने प्रौद्योगिकी के एक मजबूत सर्व-व्यापक एकीकरण की योजना बनाई है जो सामग्री, सूचना, निगरानी, मूल्यांकन और निर्णय लेने को कुशल और प्रभावी बनाती है। शिक्षकों द्वारा दीक्षा एप, समीक्षा एप, संपर्क स्मार्टशाला, डिजिटल बोर्ड, संपर्क टीवी आदि का उपयोग किया जा रहा है।

इस प्रकार, जिला पलवल यह सुनिश्चित करने के लिए दृढ़संकल्प है कि निपुण हरियाणा मिशन के तहत, हरियाणा में प्रत्येक बच्चा मूलभूत साक्षरता और संख्यात्मकता के तहत आवश्यक ग्रेड-स्तरीय दक्षताओं को प्राप्त करे और निपुण भारत मिशन को सफल बनाने में हमारी भूमिका निभाए। **(जिला समन्वयक एफएलएन, पलवल)**

3. जिला महेंद्रगढ़

भाषिक सामर्थ्य के विकास के लिए भाषा के चारों कौशलों का समानांतर विकास आवश्यक है। सुनना, बोलना, लिखना तथा पढ़ना। शिक्षक के लिए सावधानी यह है कि चारों कौशल समानांतर रूप से विकसित हों। साथ ही जो सबसे महत्त्वपूर्ण स्थिति है समझना। उसके लिए अतिरिक्त परिश्रम किए जाने की आवश्यकता है। हम जानते हैं चित्र लिपि, भाव लिपि के बाद अब ध्वन्यात्मक लिपि चल रही है। ध्वन्यात्मक लिपि को समझ पाना छोटे बच्चे के लिए आसान नहीं होता। वह ध्वनियों को वर्णों के साथ स्थापित कर सके इसके लिए जरूरी है कि वर्ण भी उसके सामने वस्तुओं के रूप में हों। जिला महेंद्रगढ़ में सभी वर्णमाला के अक्षरों के ब्लॉक बनवाये हैं, जिससे विद्यार्थी उन्हें देखकर, हाथ में लेकर महसूस कर सकें और वर्णमाला के साथ अपने भावनात्मक संबंध स्थापित कर सकें। वर्णों के द्वारा खेल-खेल में स्थापित यह भावनात्मक संबंध भविष्य में सुदृढ़ भाषिक सामर्थ्य की नींव रखेगा। हमें यह भी ध्यान रखना चाहिए कि विद्यार्थी जब विद्यालय में आता है तो वह कोरा नहीं होता। अनेक प्रकार के शब्दों को अपने पारिवारिक परिवेश से सीख कर वह विद्यालय में आया है। एक शिक्षक का दायित्व है कि वह विद्यार्थी के पूर्व ज्ञान का उपयोग करे। ज्ञात से अज्ञात की तरफ विद्यार्थी को लेकर जाए। ज्ञान को तुरंत खारिज़ न किया जाए। तुलनात्मक रूप से चीज़ों को बच्चे को समझाए ताकि वह भ्रमित न हो और सहजता के साथ चीजों को समझ पाए।

गणितीय क्षमता की सबसे अधिक आवश्यकता हमें बाज़ार में पड़ती है। बच्चे स्वयं भी बाजार की चीजों को देखकर आकर्षित होते हैं। घरों में खेल-खेल में अपनी दुकान खोल कर बैठते हैं, बाज़ार लगाते हैं। यदि हम विद्यालय में ऐसा ही बाज़ार लगाएँ तो? क्या विद्यालय में लगा हुआ यह बाज़ार विद्यार्थी की भाषिक और गणितीय क्षमताओं के विकास में कारगर सिद्ध होगा। निश्चित रूप

से ऐसा होगा। गणनाओं और भाषा के सामर्थ्य को खेल-खेल में विद्यार्थियों तक पहुँचाने का यह एक बहुत ही शानदार माध्यम है। विद्यालय में बाज़ार लगा दो। विद्यार्थियों द्वारा निर्मित नोट वहाँ चलें। गणितीय गणनाओं को खेल-खेल में सीखने का सबसे रोचक और उम्दा अनुभव होता है। विद्यार्थी इसमें बहुत रस लेते हैं। वे अपनी दुकान में अपने आसपास उपलब्ध फल-फूल, टिफिन की रखी खाद्य सामग्री, बैग में रखी पुस्तकें, पेन, पेंसिल, रबड़ आदि रखेंगे। इससे उनका भाषिक सामर्थ्य भी विकसित होगा, जो बच्चों को खेल-खेल में महत्त्वपूर्ण जानकारियाँ भी देगा। एक शिक्षक को निरंतर प्रयोगवादी होना चाहिए। बच्चों के मस्तिष्क में स्थायी छाप डालने वाली नई-नई खोजों की तरफ आकर्षित होना चाहिए। निश्चित ही खेल-खेल में प्राप्त शिक्षा बच्चों के लिए महत्त्वपूर्ण सिद्ध होगी। शिक्षा का मूल मंत्र है- 'मैंने सुना, मैं भूल गया। मैंने देखा, मुझे याद रहा। मैंने किया और मैं सीख गया।' लगातार विद्यार्थियों को हम मौका दें कि वे करके सीखें। इससे स्थायी रूप से उनकी अधिगम क्षमता का विकास होगा।

हरियाणा में शिक्षा हब के रूप में उभरे जिला महेंद्रगढ़ की अलग पहचान है। नीट की परीक्षा में पूरे भारत में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाली तनिष्का हो या सिहमा के सरकारी स्कूल की हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाली किसान की बेटी मनीषा। ये कुछ ऐसे शैक्षणिक रत्न हैं, जिन पर पूरे प्रदेश को गर्व है। ऐसी रत्नगर्भा मिट्टी में ही वे शिक्षक विराजमान हैं जो अपने प्रगतिशील, प्रयोगवादी नवाचारों से लगातार विद्यार्थियों को शिक्षण विषयों की ओर आकर्षित करते हैं। एफएलएन के माध्यम से शिक्षकों ने ठान लिया है कि वे विद्यार्थियों में गणित और भाषा के मूल संस्कारों का रोपण करेंगे।

राजकीय प्राथमिक पाठशाला जैलाफ़ में कार्यरत प्राथमिक शिक्षक अशोक शर्मा बताते हैं कि जब वह विद्यालय में आए तो उन्होंने विद्यार्थियों की स्थिति जानने के लिए उनका मूल्यांकन किया। मूल्यांकन के परिणामों ने उन्हें बहुत निराश किया। तीसरी कक्षा के विद्यार्थी सामान्य भाषा और गणित संबंधी प्रश्नों के उत्तर देने में असमर्थ थे। उनके सामने बड़ी समस्या थी कि शिक्षण से विरक्त ऐसे विद्यार्थियों में शिक्षा के प्रति रुचि कैसे जागृत

की जाए। भाषा से तो फिर भी वह परिवेश के माध्यम से जुड़े हुए थे, परंतु गणित के तो नाम से ही दूर भागते थे ऐसे में एफएलएन की तरफ से करवाए गए प्रशिक्षण कार्यक्रमों ने उनकी बहुत सहायता की।

कार्यक्रम के अंतर्गत जिला महेंद्रगढ़ में शिक्षकों के लिए अनिवार्य किया गया है कि वे विद्यालय के प्रत्येक कोने में जहाँ विद्यार्थी के पास सीखने की संभावनाएँ हैं, उनका उपयोग करें। प्रार्थना-सभा, खेल मैदान, प्रकृति का सान्निध्य। हर उस चीज का प्रयोग शिक्षक अधिगम सामग्री के रूप में करें जो बच्चों को पसंद है, जिससे बच्चे सीख सकते हैं। बच्चों की दुनिया रंगीन होती है। बच्चों को रंगों से विशेष प्रेम होता है। अतः विद्यालय की दीवारों का उपयोग अधिगम संसाधन के रूप में किया गया है। विभिन्न अंकों, लिपि चिह्नों को चित्रों के साथ जोड़ते हुए दीवारों पर बनवाया गया है। बार-बार उन पर चर्चा की जाती है। निरंतर पुनरावृत्ति का यह सिद्धांत अनिवार्यतः परिणाम देने वाला है। विद्यार्थी जब नियमित रूप से उन घटनाओं को, चित्रों को देखते हैं तो वे सहज ही उनके मस्तिष्क में समाहित हो जाती हैं। इस प्रकार खेल-खेल में वे चीजें उनके जीवन का हिस्सा बन जाती हैं। **(डॉ. विक्रम सिंह, जिला समन्वयक एफएलएन, महेंद्रगढ़)**

4. जिला फतेहाबाद

बच्चों के लिए सीखने की शुरुआत उनके चारों ओर दिखाई देने वाले परिवेश में चित्रित सामग्रियों के अवलोकन से होती है। बच्चे अपने स्तर पर ये अनुमान लगाने का प्रयास हमेशा करते रहते हैं कि जरूर कोई अर्थ इन सबके पीछे छुपा है। बच्चे के घर और समाज में तो ऐसे अवसरों या सामग्रियों की भरमार होती है और ये उनके रोजमर्रा के जीवन का अभिन्न अंग भी होता है। परन्तु जब बच्चा पहली बार स्कूल आता है तो कुछ स्थानों पर उसे अपने चारों तरफ अवलोकन के लिए ये दृश्य सामग्री कम नज़र आती है। जबकि यही प्रिंट-सामग्री बच्चे के लिए सीखने और स्कूल के लिए सिखाने का एक अच्छा उपयोगी संसाधन बन सकती है। निपुण हरियाणा मिशन का मुख्य ध्येय हमारे बच्चों को बुनियादी स्तर से ही सीखने से जोड़ना है ताकि शुरुआत से ही उनके बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मक कौशल को सुनिश्चित किया जा सके।

इस मिशन के तहत फतेहाबाद के सभी राजकीय विद्यालयों में सीखने के परिवेश को आकर्षक बनाने के लिए और बच्चों के सीखने की आवश्यकताओं को पूरा करने की शुरुआत कक्षा-कक्ष के प्रिंट रिच परिवेश के स्तर से होती है। समय-समय पर सभी अधिकारियों और मेंटर्स के द्वारा निपुण के तहत सर्वप्रथम प्रिंट रिच परिवेश को सुनिश्चित जाता है, जिसके अंतर्गत न केवल कक्षा-कक्ष की दीवारों बल्कि शिक्षा विभाग के द्वारा प्रदान की गई सभी शिक्षण सहायक सामग्रियों के शत-प्रतिशत प्रदर्शन और प्रयोग को परखा जाता है।

इस दिशा में भट्टूकलाँ खंड ने अपने सभी राजकीय प्राथमिक विद्यालयों में 16 फरवरी, 2023 को प्रिंट रिच परिवेश की एक क्लस्टर स्तरीय प्रतियोगिता का आयोजन करवाया, जिसमें क्लस्टर स्तर पर प्रथम आए विद्यालयों को पुरस्कृत भी किया गया है। अब ये विद्यालय अप्रैल, 2023 में खंड स्तर पर अपने क्लस्टर का प्रतिनिधित्व करेंगे। इस मुहिम को धीरे-धीरे जिले के अन्य खंडों के द्वारा भी अपनाया जा रहा है, जिसका परिणाम हम शैक्षणिक सत्र 2023-24 में बच्चों के नामांकन के बढ़ने के रूप में देखेंगे। शिक्षा विभाग हरियाणा की इस पहल को स्कूल स्तर के इन प्रयासों को बच्चों के अभिभावकों ने भी सराहा है। बहुत से स्कूलों ने बहुत कम कीमत पर या बिना किसी कीमत से कक्षा-कक्षों का एक जीवंत दृश्यमान रूपान्तरण किया है, जिससे सूनी पड़ी दीवारों पर एक रचनात्मक संवादात्मक परिवेश निर्मित हुआ है, जिससे बच्चों में सीखने के प्रति आत्मविश्वास और प्रेरणा स्तर बढ़ा है। निपुण हरियाणा मिशन कोरोना के कारण घटित अधिगम क्षति की प्रतिपूर्ति का एक सशक्त हथियार बनकर उभरा है। **(नरेश कुमार, जिला समन्वयक एफएलएन,फतेहाबाद)**

5. जिला पंचकूला

सरकार द्वारा 2020 में लायी गयी शिक्षा नीति को सफलतापूर्वक लागू करने की दिशा में मूलभूत साक्षरता एवं संख्यात्मकता एक महत्त्वपूर्ण कड़ी है, जिसमें निर्धारित समय अवधि में तीसरी कक्षा के अंत तक पढ़ने लिखने एवं अंकगणित को सीखने की क्षमता प्रदान की जाएगी। किसी भी योजना की सफलता उसके प्रभावपूर्ण क्रियान्वयन पर निर्भर करती है, जिसमें लक्ष्य अनुरूप प्रभावपूर्ण कार्ययोजना एवं उपचारात्मक क्रियान्वयन की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। जिला पंचकूला में इसी दिशा में कई पहलों पर कार्य किया जा रहा है।

कौन बनेगा करोड़पति की तर्ज पर मेंटर्स हेतु एफएलएन क्विज- मेंटर्स की इस योजना के क्रियान्वयन

में विशेष भूमिका है, क्योंकि वे हर अध्यापक से सीधे व नियमित रूप से जुड़े होते हैं। मेंटोर्स को सशक्त करने, मिशन की समझ विकसित करने की दिशा में कौन बनेगा करोड़पति की तर्ज़ पर जिला पंचकूला में जनवरी, 2023 में मेगा क्विज का आयोजन किया गया, जिसमें जिले के समस्त बीआरपी एवं एबीआरसी ने भाग लिया। प्रतियोगिता का आयोजन एक बड़े सभागार में किया गया, जिसमें सर्वप्रथम विभाग द्वारा प्रदान किये गये टैब्स के साथ स्क्रीनिंग की गयी। इसमें 20 प्रश्न पूछे गये। प्रतियोगिता में विशेष तकनीक का प्रयोग किया गया। प्रत्येक प्रश्न के अंत में प्रत्येक टीम स्कोर स्क्रीन पर स्वतः ही प्रदर्शित होता था। बेस्ट 10 टीमों को मुख्य प्रतियोगिता के मुख्य राउंड्स हेतु मंच पर आमंत्रित किया गया। कुल सात राउंड हुए, जिसमें एनईपी-2020, निपुण हरियाणा, एनसीएफ एवं एफएलएन क्रियान्वयन संबंधी प्रश्न पूछे गये, जिसमें फ़ोन ए फ्रेंड, फ़िफ्टी-फ़िफ्टी, फ्लिप द क्वेश्चन आदि लाइफ लाइन्स का प्रयोग किया गया।

दिव्यांग विद्यार्थियों तक एफएलएन पहुँच - प्रत्येक विद्यार्थी तक एफएलएन सुनिश्चित करने की दिशा में जिले के सभी दिव्यांग विद्यार्थियों हेतु विभिन्न समाज सेवी संगठनों की सहायता से विशेष आवश्यकता आधारित टीएलएस की व्यवस्था करवाई गयी। इसमें दिव्यांग विद्यार्थियों हेतु विभाग द्वारा नियुक्त किये गये स्पेशल अध्यापकों का सहयोग लिया जा रहा है जो दिव्यांग विद्यार्थियों के कक्षा-अध्यापकों के साथ मिल कर उन विद्यार्थियों के गुणवत्तापूर्ण एवं उपचारात्मक शिक्षण की कार्ययोजना व उसके क्रियान्वयन पर कार्य कर रहे हैं। इसका नियमित रिव्यू भी लिया जा रहा है।

थीम आधारित साप्ताहिक संकुल स्तरीय एवं एफएलएन टीचर ऑफ़ द वीक का चयन- जिला पंचकूला द्वारा एफएलएन में कक्षा कक्षों को प्रिंट-रिच बनाने, अध्यापकों के स्वयं कम खर्चीली टीएलएम निर्माण की क्षमता का विकास करने व उनमें एक स्वस्थ प्रतियोगिता के विकास के लिए साप्ताहिक थीम आधारित प्रतियोगिताएँ आयोजित की जा रही हैं। अब तक तीन प्रतियोगिताएँ आयोजित की जा चुकी हैं। प्रथम सप्ताह का थीम प्रिंट रिच कक्षा कक्ष रखा गया, द्वितीय सप्ताह विद्यार्थी डिकोडिंग कक्षा प्रतिशतता व तीसरे सप्ताह का थीम कम खर्चीली शिक्षण सहायक सामग्री का निर्माण व उसका प्रयोग रखा गया, जिसमें प्रत्येक क्लस्टर स्तर पर अध्यापकों ने इस प्रतियोगिता में बढ़-चढ़ कर भाग लिया। प्रत्येक क्लस्टर में इस आधार पर सबसे बेहतर प्रदर्शन करने वाले अध्यापकों को एफएलएन टीचर ऑफ़ द वीक चुना गया व जिले द्वारा निर्धारित फॉर्मेट में प्रमाण-पत्र भी प्रदान किये गये।

पंचकूला सुपर-16 मॉडल- अध्यापकों को अभिप्रेरणा प्रदान करने करने के लिए प्रत्येक खंड स्तर पर एफएलएन में बेहतरीन कार्य कर रहे 4-4 अध्यापकों का खंड शिक्षा अधिकारियों की अनुशंसा के आधार पर चयन किया गया व उन्हें उपायुक्त महोदय पंचकूला की

अध्यक्षता में प्रत्येक तीन माह में होने वाली जिला स्तरीय स्टीयरिंग कमेटी की मीटिंग में अपनी बेस्ट प्रैक्टिस प्रस्तुत करने का सुअवसर प्रदान किया गया। इस प्रकार प्रत्येक स्टीयरिंग कमेटी हेतु हर तीन माह बाद नये सुपर 16 अध्यापकों का चयन किया जाएगा, ताकि बिना खर्च के बेहतरीन कार्य कर रहे अध्यापकों को इस प्रकार का बेहतर पारितोषिक प्रदान किया जा सके। निश्चित ही इस प्रकार की कम खर्चीली व उपयोगी पहलें एफएलएन के बेहतर क्रियान्वयन में सहायक सिद्ध हो रही हैं। **(असिन्द्र कुमार, जिला एफएलएन समन्वयक,पंचकूला)**

6. जिला फरीदाबाद

मूलभूत शिक्षा बच्चे के भविष्य की शिक्षा का आधार है। बच्चा ग्रेड-3 से आगे के पाठ्यक्रम की जटिलताओं के लिए तैयार नहीं है, अगर उसमें समझ के साथ पढ़ने, लिखने और सरल गणितीय संचालन करने के आवश्यक मूल कौशल का अभाव है। निपुण हरियाणा मिशन का उद्देश्य मूलभूत साक्षरता और अंक ज्ञान के सार्वभौमिक अधिग्रहण को सुनिश्चित करने के लिए एक सक्षम वातावरण स्थापित करना है ताकि प्रत्येक बच्चा तीसरी कक्षा के अंत तक पढ़ने, लिखने और गणित में वांछित सीखने की दक्षता प्राप्त कर सके। एफएलएन लक्ष्यों को चार क्षेत्रों में स्थापित किया गया है: मौखिक भाषा, पढ़ना, लिखना और अंकज्ञान।

मिशन के उद्देश्यों को पूरा करने के लिए जिला फरीदाबाद ने कोई कसर नहीं छोड़ी है। स्कूल शिक्षा विभाग द्वारा उपयोग किए जाने वाले नियमित निगरानी उपकरणों के अलावा, शिक्षक मूलभूत स्तर पर छात्रों को सीखने में मदद करने के लिए रचनात्मक तरीके लेकर आ रहे हैं।

जिले ने छात्रों के पढ़ने के कौशल को बढ़ावा देने के लिए 'एवरी वर्ड मैटर्स' नामक एक पहल शुरू की है। छात्रों को प्रत्येक ग्रेड स्तर के लिए आबंटित समय में अधिक से अधिक शब्दों को पढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया गया। शब्दों को पढ़ते समय, छात्रों को उनकी समग्र क्षमताओं का विकास करते देखा गया। इस पहल से शिक्षकों को यह पता लगाने में मदद मिली है कि उनके छात्र जो पढ़ते हैं उसे कितनी अच्छी तरह पढ़ और समझ सकते हैं।

प्रिंट-समृद्ध वातावरण- प्रिंट से भरपूर माहौल में छोटे बच्चे प्रिंट के साथ कई तरह से इंटरैक्ट कर

सकते हैं। जिले ने अपने 96% प्रिंट-समृद्ध कक्षाओं को सफलतापूर्वक कवर किया है। भाषा और साक्षरता के विकास के लिए कक्षा में रीडिंग कॉर्नर विकसित किए जाते हैं। जीजीपीएस एनआईटी-3 और जीपीएस डबुआ गाँव के कुछ नवोन्मेषी शिक्षकों के पास विद्यार्थियों के रचनात्मक प्रयास द्वारा तैयार किया गया बच्चों का कोना है, जिसमें बच्चे सीखने में अपने दोस्तों की सहायता करते हैं।

जोर से पढ़ें, गाने और तुकबंदी- ज़ोर से पढ़ना एक सरल अभ्यास है जिसमें शिक्षक एक किताब से एक दिलचस्प कहानी का चयन करता है और उसे बच्चे को पढ़कर सुनाता है। टोन, टेम्पो और वॉल्यूम में परिवर्तन बच्चे का ध्यान आकर्षित करते हैं और रुचि विकसित करते हैं। जब उन्हें कहानी पढ़कर सुनाई जा रही हो, तब बच्चों को प्रश्न पूछने और टिप्पणी करने के लिए आमंत्रित किया जाता है। ज़ोर से पढ़ने से उनके सुनने और समझने के कौशल में सुधार होता है। बच्चों को किसी भी तरह से कहानी के बारे में बात करने के लिए आमंत्रित किया जाता है, जिसमें इसे विस्तारित करना, पात्रों को प्रतिस्थापित करना/जोड़ना और अपनी खुद की कहानियों का आविष्कार करना शामिल है। बच्चे गाने और तुकबंदी को उतना ही पसंद करते हैं जितना कि उन्हें किताबें पसन्द हैं। तुकबंदी वाले शब्द बच्चों को मौखिक भाषा के साथ नोटिस करने और संलग्न करने में मदद करते हैं, साथ ही अपनी शब्दावली का विस्तार करते हुए अपने स्वयं के शब्दों और पंक्तियों का निर्माण करते हैं। ये कम लागत वाली गतिविधियाँ कक्षाओं में सकारात्मक सीखने के परिणाम पैदा कर रही हैं।

खुली बातचीत- सामान्य तौर पर बच्चे खुद से बात करना और बोलना पसंद करते हैं। हम युवाओं के इस व्यवहार का उपयोग उनकी शब्दावली विस्तार, सही शब्द उपयोग और उच्चारण का आकलन करने के लिए करते हैं। बच्चों को प्रोत्साहित किया जाता है कि वे अपने स्कूल के अनुभवों के बारे में यथासंभव सहज और खुले तरीके से बात करें। यह उनके संवादात्मक भाषा कौशल में सुधार करता है और शिक्षकों को उनके छात्रों के स्कूल के अनुभवों के प्रति सचेत करता है।

साझा पढ़ना- साझा पढ़ना शुरुआती साक्षरता के लिए फायदेमंद है और विशेष रूप से ग्रेड एक, दो और तीन के बच्चों के लिए उपयोगी है। साझा पठन के दौरान बच्चों द्वारा या शिक्षक द्वारा बच्चों की सहायता से चित्रों और पाठ वाली बड़ी किताबें जोड़ियों में पढ़ी जाती हैं। इससे बच्चों को नए शब्द सीखने और वे जो पढ़ते हैं उसे समझने में भी मदद मिलती है और यह साथियों के साथ पढ़ने की सुविधा प्रदान करता है। बच्चों को सीखने में मदद करने के लिए कई अनौपचारिक सेटिंग्स हैं, जिन्हें स्कूल में स्थापित किया गया।

गणितीय सोच के लिए अवसर पैदा करना- बच्चे के लिए बुनियादी गणितीय सोच की आवश्यकता होती है। व्यावहारिक और गतिविधि-आधारित विधियों का उपयोग करके गणित को प्रभावी ढंग से पढ़ाने में शिक्षकों की सहायता के लिए गणित टीएलएम का निर्माण किया गया है। साथ ही, यह छात्रों की गणित में रुचि बढ़ाकर और व्यावहारिक विधि के माध्यम से उनकी जिज्ञासा को संतुष्ट करके जटिल विषयों की गहरी और अधिक स्थायी समझ प्रदान करने में मदद करता है, ताकि छात्र कक्षा में किए जाने वाले गणित और वास्तविक दुनिया में उपयोग किए जाने वाले गणित के बीच संबंध देख सकें। **(डॉ.अविनाशा शर्मा, जिला एफएलएन समन्वयक, फरीदाबाद)**

7. जिला यमुनानगर

निपुण हरियाणा मिशन आधारभूत साक्षरता एवं संख्या ज्ञान मिशन कार्यक्रम के अंतर्गत जिला यमुनानगर के सभी प्राथमिक विद्यालयों में इस कार्यक्रम को अच्छी प्रकार से लागू करने हेतु निम्नलिखित प्रयास किए गए हैं-

कार्यक्रम को लेकर अध्यापकों, एबीआरसी और बीआरपी की समझ का मजबूत होना अति आवश्यक है, इसके लिए सभी प्राथमिक अध्यापकों का मार्च 2022 से अप्रैल 2022 में तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें जिला यमुनानगर के 1773 अध्यापकों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। इसी कड़ी में सभी प्राथमिक अध्यापकों को जून 2022 से लेकर जुलाई 2022 के बीच में पाँच दिवसीय प्रशिक्षण करवाया गया। इस चरण में प्राथमिक अध्यापकों के साथ-साथ सभी एबीआरसी और सभी बीआरपी का भी पाँच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम पूरा कराया गया, जिससे सभी प्राथमिक अध्यापकों एबीआरसी और बीआरपी में कार्यक्रम के प्रति समझ मजबूत बनी और उन्होंने विद्यालय स्तर पर कार्य करना शुरू किया। इसके साथ ही कार्यक्रम की गुणवत्ता की जाँच के हेतु एबीआरसी और बीआरपी के माध्यम से कक्षा अवलोकन भी करवाया गया, जिससे अध्यापकों को सहायता प्रदान की जा सके और कार्यक्रम को ठीक प्रकार से लागू किया जा सके। प्रशिक्षण कार्यक्रम के तृतीय चरण में सभी प्राथमिक अध्यापकों का दो दिवसीय रिफ्रेशर प्रशिक्षण करवाया गया। यही नहीं, विभाग के द्वारा सभी एबीआरसी और बीआरपी का तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम नीलोखेड़ी, करनाल में आयोजित किया गया, जिसमें जिला के सभी एबीआरसी और बीआरपी ने भाग लिया।

इस कार्यक्रम के अंतर्गत प्राथमिक स्तर पर पढ़ने वाले सभी बच्चों को शत-प्रतिशत लाभ प्रदान करना अनिवार्य है जिसके लिए नवीन शिक्षण विधियाँ, जिसमें बच्चों को खेल-विधि द्वारा पढ़ाया जाता है। विभाग द्वारा प्रत्येक विद्यालय में भाषा, गणित एवं अंग्रेज़ी की किट प्रदान की गई है, जिसके द्वारा बच्चों को बड़ी आसानी से खेल-विधि का प्रयोग करके सिखाया जा सकता है। अध्यापकों को इन किटों का प्रयोग करने हेतु प्रशिक्षित भी किया गया है व सभी क्लस्टर मुखिया, एबीआरसी व बीआरपी को कक्षा स्तर पर गुणवत्ता की जाँच करने हेतु प्रेरित किया गया है।

कार्यक्रम की समझ को मजबूत करने हेतु एवं बच्चों व उनके अभिभावकों को निपुण हरियाणा मिशन कार्यक्रम से अवगत कराने हेतु जिला यमुनानगर में प्रत्येक 3 महीने में मेगा पीटीएम का आयोजन करवाया जाता है। ये पीटीएम मई 2022, जुलाई 2022, दिसंबर

2022 एवं मार्च 2023 में आयोजित करवाई गई हैं, जिनके माध्यम से कार्यक्रम की समझ को अभिभावकों तक प्रेषित करने हेतु सकारात्मक प्रयास किया गया है।

कार्यक्रम की गुणवत्ता को जाँचने हेतु एवं कार्यक्रम को विद्यालय स्तर पर मज़बूती से लागू करने हेतु 27 फरवरी, 2023 को जिला यमुनानगर में जिला शिक्षा अधिकारी/ जिला मौलिक शिक्षा अधिकारी द्वारा मेगा मॉनिटरिंग/ मेंटरिंग/पर्यवेक्षण का आयोजन किया गया, जिसमें सभी सीआरसी, मुखिया, प्रिंसिपल, हेडमास्टर, एबीआरसी, बीआरपी, खंड शिक्षा अधिकारी, डाइट के प्रवक्ता, सभी एपीसी, डीपीसी, जिला शिक्षा अधिकारी, प्रिंसिपल व अन्य जिला अधिकारियों द्वारा प्राथमिक विद्यालयों का अवलोकन किया गया, जिसमें दो प्रकार के गूगल फार्म- विद्यालय अवलोकन गूगल फार्म व कक्षा अवलोकन गूगल फार्म के माध्यम से डाटा एकत्रित किया गया। इस कार्य को सही प्रकार से संपन्न करने हेतु प्रत्येक अधिकारी के साथ एक एबीआरसी या बीआरपी को लगाया गया। इसके लिए विद्यालय स्तर पर प्रत्येक कक्षा का सूक्ष्म अवलोकन किया गया, जिसमें ज़िले के 191 स्कूलों का पर्यवेक्षण किया गया व 442 कक्षा-कक्षों का अवलोकन किया गया, जिसके द्वारा कार्यक्रम की गुणवत्ता को जाँचा गया और अध्यापकों को कार्यक्रम को मज़बूती से लागू करने हेतु निर्देशित किया गया। इसके लिए प्रत्येक विद्यालय में लिखित रूप में सृजनात्मक फीडबैक देने हेतु सभी पर्यवेक्षकों को आदेशित किया गया व पर्यवेक्षण के बाद सभी अध्यापकों के साथ विद्यालय में पर्यवेक्षकों के द्वारा एक मीटिंग का आयोजन करवाया गया, जिसमें विद्यालय की अच्छी बातों व कमियों के बारे में अध्यापकों को अवगत कराया गया व उन्हें दूर करने हेतु निर्देशित किया गया ताकि अगली विजिट से पहले सभी अध्यापक इन कमियों को पूरा कर लें।

गुणवत्ता को सुनिश्चित करने हेतु मेंटरिंग/ मोनिट्रिंग/ पर्यवेक्षण का दिनांक 9 मार्च से लेकर 14 मार्च, 2023 के बीच में पुनः फीडबैक अवलोकन कराया गया, जिससे कार्यक्रम को सही प्रकार से विद्यालय में लागू करवाया जा सके। यह फीडबैक पर्यवेक्षण करने हेतु सभी खंड शिक्षा अधिकारियों एवं खंड संसाधन समन्वयकों को निर्देशित किया गया व फीडबैक की रिपोर्ट को कार्यालय में भेजने हेतु निर्देशित किया गया। इस प्रकार द्वितीय फीडबैक चरण में सभी विद्यालयों में जो कमियाँ पाई गई थीं, उन्हें पूरा किया गया।

जिला यमुनानगर में विद्यार्थियों और अध्यापकों की संख्या को बढ़ाने हेतु दैनिक उपस्थिति ट्रैकिंग कार्यक्रम चलाया गया जिसके माध्यम से जिला स्तर पर प्रत्येक स्कूल की दैनिक उपस्थिति को जाँचा गया। प्रत्येक प्राथमिक विद्यालय को एक गूगल फार्म के माध्यम से दैनिक उपस्थित विद्यार्थियों और उपस्थित अध्यापकों की संख्या को भरना था। यह कार्यक्रम माह जनवरी, 2023 से लेकर 31 मार्च, 2023 तक चलाया गया है। इसके

सकारात्मक परिणाम निकल कर सामने आए हैं।

निपुण हरियाणा मिशन कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए जिला यमुनानगर में अक्टूबर 2022 से लेकर मार्च 2023 तक प्रति माह सभी क्लस्टर मुखिया की मेगा मीटिंग का आयोजन करवाया गया जिसके माध्यम से सभी को कार्यक्रम को सफल बनाने हेतु महत्त्वपूर्ण दिशा-निर्देश प्रदान किए गए एवं सभी प्राथमिक विद्यालयों का नियमित अवलोकन करने हेतु आदेशित किया गया। इसके कारण सभी सीआरसी मुखिया नियमित रूप से प्राथमिक विद्यालयों का अवलोकन करने हेतु तैयार हुए और उन्होंने अपने-अपने क्लस्टर में प्राथमिक शिक्षा को अति महत्त्वपूर्ण मानते हुए उसमें बदलाव करने हेतु अपना सकारात्मक योगदान दिया। इसी प्रकार सभी एबीआरसी और बीआरपी की भी प्रति माह मेगा-मीटिंग का आयोजन करवाया गया।

कार्यक्रम की सफलता को सुनिश्चित करने के लिए खंड स्तर पर व क्लस्टर स्तर पर लो कॉस्ट टीएलएम प्रतियोगिता और प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। 28 फरवरी, 2023 को राजकीय प्राथमिक विद्यालय मुजफ्फर कला, खंड छछरौली में लो कॉस्ट टीएलएम प्रदर्शनी का आयोजन करवाया गया, जिसमें लगभग 500 प्रकार की टीएलएम को प्रदर्शित किया गया और अन्य अध्यापकों को भी इसी प्रकार की टीएलएम बनाने हेतु प्रेरित किया गया।

कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए क्लस्टर स्तर पर सीपीआईयू मीटिंग का प्रति माह आयोजन अनिवार्य रूप से करवाया गया। 8 अक्टूबर, 2022 को जिला में पहली सीपीयू की मीटिंग का आयोजन करवाया गया। उसके बाद जिला के सभी क्लस्टरों में इस मीटिंग को लागू किया गया और अक्टूबर 2022 से लगातार हर माह यह मीटिंग जिले के सभी क्लस्टर पर आयोजित की जाती है।

जिला यमुनानगर के 594 विद्यालयों में बहुत से अध्यापक पूरी तल्लीनता और लगन के साथ निपुण हरियाणा मिशन कार्यक्रम को सफल बनाने हेतु सभी बिंदुओं को लागू कर रहे हैं। ऐसे अध्यापकों की क्लस्टर स्तर पर, खंड स्तर पर और जिला स्तर पर पहचान की गई और उन्हें प्रशंसा-पत्र देकर सम्मानित किया गया। यह कार्य खंड स्तर पर खंड शिक्षा अधिकारी के माध्यम से किया गया व जिला स्तर पर जिला शिक्षा अधिकारी व जिला मौलिक शिक्षा अधिकारी के द्वारा किया गया, जिसमें अध्यापकों के कार्य को पहचान मिली और अन्य अध्यापकों को भी लगन और तल्लीनता के साथ कार्य करने हेतु प्रेरित किया गया। अब जिला यमुनानगर में इन अध्यापकों से प्रेरित होकर सभी स्कूलों में यह कार्यक्रम अच्छी प्रकार से चल रहा है। और भविष्य में भी इसके बेहतर परिणाम निकल कर आएँगे। **(संजीव कुमार, जिला एफएलएन समन्वयक, यमुनानगर)**

मिशन को सफल बनाने के लिए अन्य ज़िलों में भी कमाल का काम हो रहा है। आगामी अंक में आप अन्य कुछ ज़िलों की नवाचारी गतिविधियों को पढ़ेंगे। (जारी...)

-शिक्षा सारथी डेस्क

प्रवेश उत्सव: नव उमंग, नव तरंग

सुरेश राणा

नए शैक्षिक सत्र का आगाज़ सरकारी स्कूलों में नई उम्मीदों और नई तरंगों के साथ शुरू हुआ। गत वर्षों की भाँति इस वर्ष भी प्रवेश उत्सव नए रंगों में सराबोर हुआ नजर आया। प्रदेश के सभी राजकीय स्कूलों में प्रवेश उत्सव हर्षोल्लास से मनाया गया। स्कूल में शिक्षकों ने अलग-अलग अंदाज़ में बच्चों का प्रवेश करवाया।

शैक्षणिक सत्र के पहले दिन प्रवेश उत्सव में, नव प्रवेशी और नव कक्षा प्रवेशी दोनों ही प्रकार के छात्रों का विद्यालय में स्वागत किया गया। परीक्षा-परिमाण घोषित होते ही विद्यार्थियों ने अगली कक्षा में प्रवेश लिया। जोश से ओतप्रोत शिक्षक विद्यार्थियों के स्वागत हेतु पलकें बिछाए बैठे थे। नौनिहालों ने जब दाखिले के लिए नन्हे-नन्हे कदमों से विद्यालय में प्रवेश किया तो उनका स्वागत कहीं फूल मालाएँ पहनाकर किया गया तो कहीं तिलक लगाकर किया गया। विद्यालयों में बड़ा ही मनमोहक दृश्य था। कहीं यज्ञ हो रहे थे, कहीं हलवे और लड्डू का प्रसाद वितरण किया जा रहा था, तो कहीं मध्याह्न भोजन में विशेष पकवान खीर पूड़ी आदि परोसे गए। विद्यालयों में सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए तथा मनोरंजनात्मक गतिविधियों का आयोजन किया गया। विभिन्न विद्यालयों में वार्षिक उत्सव मनाया गया, जिसमें मेधावी विद्यार्थियों को ट्रॉफी, प्रमाण-पत्र, मेडल आदि प्रदान किए गए।

पाठ्यपुस्तक वितरण-

प्रवेश उत्सव को शानदार बनाने के लिए विभाग ने नया शिक्षा सत्र प्रारंभ होने से पहले ही स्कूलों में नई किताबें पहुँचाने की व्यवस्था की थी। बच्चों को परिणाम मिलते ही उनके हाथों में नई किताबें देखने को मिली और बच्चे एक नए जोश व उत्साह में दिखाई दिए। कक्षा पहली से आठवीं तक के विद्यार्थियों को निःशुल्क पाठ्यपुस्तकें वितरित की गईं।

अभिभावक-अध्यापक बैठकों का आयोजन-

प्रवेश उत्सव पर अभिभावक-अध्यापक बैठक का आयोजन किया गया, जिसमें अभिभावकों ने विद्यार्थियों के परीक्षा परिणाम के बारे में जानकारी हासिल की। इस बैठक में माता-पिता को स्किल पासबुक दिखाई गई, जिस पर उनके हस्ताक्षर करवाए गए। उन्होंने विद्यार्थियों के शैक्षिक प्रदर्शन के बारे में शिक्षकों से चर्चा की तथा आगामी सत्र की रूपरेखा तैयार की गईं।

नामांकन अभियान-

सरकारी विद्यालयों में छात्र संख्या बढ़ाने के लिए विशेष प्रयास किए जा रहे हैं। नामांकन अभियान के तहत शिक्षक टोली बनाकर डोर-टू-डोर जाकर प्रचार में जुटे हुए हैं। गाँवो में रैलियाँ निकाली जा रही हैं। पोस्टर, पेंपलेट, बैनर, होर्डिंग्स लगवाकर सरकार द्वारा प्रदान की जाने

प्रवेश उत्सव नामांकन बढ़ाने में सहायक होगा

खण्ड गोहाना के सभी विद्यालयों में प्रवेश उत्सव बड़ी धूमधाम से मनाया गया। परीक्षा परिणाम घोषित करने के पश्चात विद्यार्थियों ने अगली कक्षा में प्रवेश लिया। विभिन्न स्कूलों में निजी स्कूलों के विद्यार्थी बड़े उत्साह से प्रवेश ले रहे हैं। बड़े ही गर्व की बात है कि शिक्षक निजी विद्यालयों के शिक्षकों की तरह नामांकन के लिए घर-घर जा रहे हैं। नव-प्रवेशियों का स्वागत अनूठे ढंग से किया जा रहा है। बच्चों का स्वागत फूल मालाएँ पहनाकर, तिलक लगाकर किया जा रहा है। हवन/यज्ञ से नए सत्र का शुभारंभ किया जा रहा है। कुछ स्कूलों ने तो आकर्षक विज्ञापन बोर्डों के माध्यम से सरकारी स्कूलों में बच्चों को लुभाने की योजना बनाई है, जो कि सराहनीय पहल है। विद्यालयों में त्रिवेणी भी लगाई जा रही है। चारों ओर खुशनुमा माहौल है। शिक्षक उत्साह के साथ जुटे हुए हैं। सरकारी योजनाओं का अनूठे ढंग से प्रचार प्रसार किया जा रहा है। विभाग द्वारा भी प्रवेश उत्सव बारे दिशा निर्देश जारी किए गए हैं। प्रवेश उत्सव नामांकन बढ़ाने में तो सहायक होगा ही, इससे ड्रॉप-आउट दर कम करने में भी मदद मिलेगी। स्कूल मुखियों से समय समय पर प्रवेश-उत्सव के दौरान हुए दाखिलों की प्रगति रिपोर्ट ली जा रही है तथा उन्हें अधिक से अधिक नामांकन करने के लिए प्रेरित किया जा रहा है। प्रवेश उत्सव के दौरान विभिन्न स्कूलों के दौरे किए जा रहे हैं तथा आवश्यक दिशा निर्देश दिए जा रहे हैं। निःसंदेह खंड गोहाना के सरकारी स्कूलों में दाखिले में वृद्धि होगी। शिक्षकों की मेहनत अवश्य ही रंग लाएगी।

अनिल श्योराण
खण्ड शिक्षा अधिकारी, गोहाना
सोनीपत

वाली सुविधाओं तथा विद्यालय की उपलब्धियों के बारे में जनमानस को अवगत करवाया जा रहा है।

सरकार द्वारा प्रदान की जाने वाली सुविधाओं का प्रचार-

शिक्षक नामांकन बढ़ाने के लिए घर-घर जाकर सरकार द्वारा प्रदान की जाने वाली विभिन्न सुविधाओं की जानकारी प्रदान कर रहे हैं।

विद्यार्थियों को लेकर चलाई गई विभिन्न योजनाओं के बारे में अभिभावकों को अवगत करवाया जा रहा है। सरकार द्वारा चलाई जा रही विभिन्न योजनाएँ-

प्रवेश उत्सव पर्व की तरह मनाया गया

हमारे विद्यालय में प्रवेश उत्सव बड़ी धूमधाम से मनाया गया। शिक्षकों द्वारा सर्वे किया गया। घर-घर जाकर बच्चों को सरकारी स्कूल में प्रवेश हेतु प्रोत्साहित किया गया। पंचायत, गाँव के मौजिज व्यक्तियों के साथ सम्पर्क साधा गया। हमारे विद्यालय में सभी प्रकार की भौतिक सुविधाएँ उपलब्ध हैं। खुले हवादार कमरे, स्मार्ट क्लास रूम, सोलर पैनल, आधुनिक सुविधाओं से सुसज्जित शौचालय, वाटर हार्वेस्टिंग सिस्टम, शानदार कंप्यूटर लैब, हरे-भरे पार्क। गाँव के व्यक्तियों को स्कूल का भ्रमण करवाया गया। प्रवेश-उत्सव के दौरान विद्यार्थियों का स्वागत तिलक लगाकर, फूल मालाएँ पहनाकर किया गया। मेधावी विद्यार्थियों को ट्राफियाँ प्रदान की गईं। हमें पूर्ण विश्वास है कि विद्यालय में इस सत्र में छात्र संख्या में अवश्य वृद्धि होगी।

वीरेंद्र वालिया
प्रधानाचार्य
राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय मुर्तज़ापुर, खण्ड पेहोवा, कुरुक्षेत्र

उत्सव से नव सत्र की शानदार शुरुआत

विद्यालय में प्रवेश उत्सव बड़े ही शानदार तरीके से मनाया गया। परीक्षा परिणाम घोषित करने के पश्चात् मेधावी विद्यार्थियों को पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया। प्रवेश उत्सव की शुरुआत हवन के साथ की गई। जिसमें सभी शिक्षकों, विद्यार्थियों, स्कूल प्रबंधन समिति के सदस्यों, अभिभावकों ने भाग लिया। नव प्रवेशियों का स्वागत तिलक लगाकर और उपहार देकर किया गया। विद्यालय में त्रिवेणी रोपित की गई। इस अवसर पर सीएमजीजीए मैडम अवंतिका, खंड परियोजना संयोजक पानीपत विक्रम सहरावत, ओम ग्रीन कमेटी के अध्यक्ष हरिओम, जयदीप आदि उपस्थित रहे।

ज्योति चोपड़ा
मुख्य शिक्षिका
राजकीय मॉडल संस्कृति प्राथमिक पाठशाला रजापुर, पानीपत

एक प्रवेशोत्सव ऐसा भी

राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय घड़ावठी, लाखन माजरा, रोहतक में कुछ अलग ढंग से इस प्रवेश उत्सव को मनाया गया। परीक्षा परिणाम घोषित करने के बाद नए विद्यार्थियों का स्वागत किया गया। विद्यालय प्राचार्या स्वीटी भारती, उनके स्टाफ सदस्यों और विद्यार्थियों ने गाँव में घर-घर जाकर पैम्फलेट के माध्यम से प्रचार किया, जिसमें विद्यालय का परीक्षा परिणाम, विद्यालय की शैक्षिक और पाठ्य सहगामी क्रियाओं की उपलब्धियों और शिक्षा विभाग द्वारा प्रदान की जाने वाली विभिन्न सुविधाओं का उल्लेख किया गया था। उसके बाद शिक्षकों ने स्कूटर पर जाकर मुनादी की। कैसेट चलाकर म्यूज़िक के साथ घर-घर, गली-गली में लोगों से बातचीत करते हुए उनको स्कूल की खूबियाँ बताईं। अगला कदम यह हुआ कि स्कूल की प्राचार्या ने बड़े-बड़े बैनर छपवाए और गाँव की बैठकों में जाकर दीवारों पर बड़े-बड़े बैनर लगवाए, जिसमें स्कूल के बच्चे विभिन्न क्रियाकलाप कर रहे थे। इसके बाद प्राचार्या ने मिड-डे-मील वर्कर की सहायता से तथा आँगनवाड़ी कार्यकर्ताओं की सहायता से गली-गली में जाकर बैठकें कीं। विद्यालय के प्रवेश उत्सव का आगाज़ समारोह के साथ हुआ। इस समारोह में गाँव के सभी मोजिज व्यक्ति, अभिभावक, स्कूल प्रबंधन समिति के सदस्य उपस्थित रहे। विद्यार्थियों द्वारा शानदार सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया। नृत्य, नाटिका, ग्रुप-डांस, सोलो-डांस, भजन, गीत आदि की प्रस्तुति से दर्शकों को अचंभित कर दिया। प्राचार्य ने स्कूल के सभी अध्यापकों व नॉन टीचिंग स्टाफ को मेडल व सर्टिफिकेट देकर सम्मानित किया। यूथ-पार्लियामेंट में राज्य भर में फर्स्ट आने पर प्राचार्या ने स्कूल की तरफ से बच्चों को सम्मानित किया तथा लगभग 150 बच्चों को एकेडमिक एक्स्ट्रा करिकुलर एक्टिविटीज़ के लिए सम्मानित किया। मज़ेदार बात यह रही कि विद्यार्थियों के माता-पिता को भी मंच पर बुलाया गया।

» सुपर-100 स्कीम के तहत नीट और जेईई की निःशुल्क तैयारी के लिए प्रशिक्षण
» विद्यार्थियों का नियमित मूल्यांकन
» हर माह पीटीएम का आयोजन
» बाल स्वास्थ्य कार्यक्रम के तहत बच्चों के लिए निःशुल्क जाँच शिविर
» विद्यार्थियों के लिए मुफ्त साइकिल सुविधा
» मुफ्त वर्दी, पुस्तकें, स्कूल बैग और स्टेशनरी
» विद्यार्थियों के लिए अनेक प्रकार की छात्रवृत्तियाँ।
» विज्ञान के प्रति रुचि बढ़ाने के लिए योजना।
» बुनियाद योजना
» पाठ्य सहगामी प्रतियोगिताओं का आयोजन
» स्मार्ट क्लास रूम
» इको क्लब, क्विज़ क्लब, लीगेल लिटरेसी क्लब, विज्ञान क्लब, गणित क्लब आदि की स्थापना

हवन, तिलक व मिठाई से स्वागत कर नलवा में मनाया प्रवेश उत्सव

विद्यालय में सभी छात्रों, अभिभावकों व शिक्षकों की उपस्थिति में हवन कर विश्व शांति की मंगल कामना की गई। कक्षा छठी से आठवीं और नौवीं ग्यारहवीं में श्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले छात्रों व कक्षा छठी व नौवीं में प्रवेश लेने वाले सभी छात्रों का शिक्षकों द्वारा तिलक लगाकर मिठाई खिला कर स्वागत किया गया। प्राचार्य सुरेंद्र सिंह ने सभी छात्रों व अभिभावकों को शुभकामनाएँ देते हुए शिक्षा के साथ सामाजिक, सांस्कृतिक गतिविधियों में भागीदारी कर अपने व्यक्तित्व विकास करने का आह्वान किया। प्रवेश लेने वाले छात्रों को विद्यालय की प्रयोगशाला, पुस्तकालय, कक्षा-कक्ष का भ्रमण करवाया। विद्यालय प्रबंधन समिति के प्रधान सोनू, पूर्व प्रधान हरिओम ने उपस्थित अभिभावकों को विद्यालय की विभिन्न गतिविधियों व उपलब्धियों की विस्तार से जानकारी दी। छात्रों को प्रकृति व पर्यावरण से जोड़ने के लिए राष्ट्रीय सेवा योजना कार्यक्रम अधिकारी ने अपनी कक्षाओं में श्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले छात्रों से पौधे रोपित करवाए। छात्रों ने भी पौधों की देखभाल करने का संकल्प लिया। इस अवसर पर सभी स्टाफ सदस्य, छात्र व अभिभावक उपस्थित रहे।

अशोक वशिष्ठ
हिंदी प्राध्यापक
राजकीय मॉडल संस्कृति वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय नलवा, हिसार

शिक्षा के आंगन में संस्कृति की त्रिवेणी-

प्रवेश उत्सव के तहत सभी सरकारी विद्यालयों के परिसर में त्रिवेणी लगाई जाएगी। भारतीय संस्कृति में रचा बसा तथा राष्ट्रीय एकता और अखंडता के प्रतीक बड़, पीपल और नीम के पौधे रोपित करने का यह सिलसिला 22 अप्रैल तक चलेगा। पृथ्वी-दिवस तक चलने वाले अभियान में विद्यार्थियों को प्रदूषण से निपटने में पेड़-पौधों की भूमिका और भारतीय संस्कृति में त्रिवेणी के महत्त्व के बारे में बताया जाएगा। विद्यार्थियों को पर्यावरण संरक्षण के बारे में अवगत करवाया जाएगा। इस बारे निदेशालय शिक्षा विभाग द्वारा निर्देश जारी किए हैं। सभी स्कूल मुखियाओं को त्रिवेणी लगाने की रिपोर्ट विभाग को भेजनी होगी।

नामांकन बढ़ाने वाले विद्यालय होंगे सम्मानित-

झज्जर जिले में प्रवेश उत्सव को और सार्थक बनाने के लिए वहाँ के जिला शिक्षा अधिकारी राजेश खन्ना ने अनूठी शुरुआत की। उन्होंने अपने जिले में सभी खंड शिक्षा अधिकारियों को निर्देश जारी किए कि वे अपने-अपने खंड में विद्यालयों में विद्यार्थियों की संख्या बढ़ाने के लिए विशेष अभियान चलाएँ। उन्होंने कहा कि जिन विद्यालयों

की वर्तमान छात्र संख्या एक हज़ार या उससे अधिक है, वे छात्र संख्या को मौजूदा सत्र में 10 प्रतिशत बढ़ाने का प्रयास करें। जिन विद्यालयों की छात्र संख्या 501 से 1000 के बीच में है, वे अपने विद्यालय की छात्र संख्या में 25 प्रतिशत वृद्धि करने के लिए प्रयत्न करें व जिन विद्यालयों में विद्यार्थियों की संख्या 101 से 500 के बीच में है वे अपने नामांकन में 50 प्रतिशत बढ़ोतरी के लिए प्रयास करें। जो विद्यालय ऐसा करेंगे, उन्हें विशेष रूप से पुरस्कृत किया जाएगा।

दाखिला अभियान के तहत बड़ौली स्कूल का स्टाफ़ घर-घर पहुँचा-

राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय बड़ौली में नए शैक्षणिक सत्र के प्रारंभ होने पर प्राचार्या के नेतृत्व में स्टाफ़ सदस्यों ने गाँव में गली-गली जाकर दाखिले की अपील की। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्राचार्या आरती सलूजा और आयोजन पीजीटी फ़ाइन आर्ट प्रदीप मलिक ने किया। प्रवेशोत्सव के तहत विशेष नामांकन अभियान प्रभात-फेरी को प्राचार्या आरती सलूजा ने हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। प्रधानाचार्या ने बताया कि नए शैक्षणिक सत्र में विद्यालय को पीएम श्री स्कूल का दर्जा भी मिला है। जिसके तहत विद्यालय में तकनीक से परिपूर्ण कक्षा-कक्ष के साथ-साथ मूलभूत सुविधाओं को और मज़बूत किया जाएगा। उन्होंने बताया कि कम खर्च में बेहतर शिक्षा देते हुए सरकारी स्कूल में छात्रों का चहुँमुखी विकास किया जाता है। प्रभात फेरी के आयोजक पीजीटी फ़ाइन आर्ट प्रदीप मलिक ने बताया कि टीम-भावना से किया गया प्रयास सार्थक परिणाम लेकर आएगा।

ड्रॉप-आउट दर को कम करना-

प्रवेश-उत्सव कार्यक्रम का उद्देश्य सरकारी स्कूलों में नामांकन में वृद्धि के साथ-साथ ड्रॉप-आउट दर को भी शून्य करना है। ड्रॉप-आउट के अनेक कारण हैं। राजकीय स्कूलों में दाखिला प्रक्रिया की पेचीदगी व तत्परता की कमी, कुछ वर्ग व श्रेणियों के अभिभावकों की बालिका की शिक्षा के प्रति अरुचि, पड़ोसी स्कूल द्वारा नए बालकों के स्वागत की तैयारी का अभाव, जनसंपर्क का अभाव व योजना क्रियान्वयन में अरुचि, ब्रांडिंग का अभाव व सुविधाओं को अच्छे तरीके से प्रदर्शित न कर पाना आदि है। प्रवेश उत्सव के माध्यम से उपर्युक्त बिंदुओं पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है, ताकि नामांकन दर में वृद्धि हो और ड्रॉप-आउट दर को शून्य किया जा सके। शिक्षक विशेष प्रयास कर रहे हैं। वे प्रवासी मज़दूरों से भी सम्पर्क साध रहे हैं। प्रदेश भर में प्रवेश-उत्सव शानदार ढंग से चला है।

हिंदी प्राध्यापक
राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय मुर्तज़ापुर
खंड पेहोवा, कुरुक्षेत्र, हरियाणा

ताकि विद्यालय अपना-सा लगे

शिक्षा विभाग द्वारा निरन्तर जारी अभियान प्रवेश-उत्सव सिर्फ दाखिला या नामांकन अभियान न होकर एक उत्सव (पर्व) बन चुका है। जिसका मुख्य उद्देश्य यह है कि बच्चा नए माहौल में अपने आपको किसी भी तरह से अज़नबी महसूस न करे, बल्कि जीवन की नई शुरुआत का आनंद ले। क्योंकि जिस प्रकार से एक बच्चा जब किसी पर्व को देखता है, मनाता है तो उसके मन में बहुत उत्साह, उमंग व खुशियाँ होती हैं, ठीक उसी तरह से बच्चा विद्यालय में आकर भी वैसा ही प्रसन्न और उत्साहित महसूस करे।

नवांगतुकों को घर जैसा माहौल देने के लिए उनका तिलक लगाकर, पुष्पमाला पहनाकर व औषधीय पौधे देकर न केवल स्वागत किया गया, बल्कि उनको पर्यावरण संरक्षण के साथ जोड़कर भविष्य के लिए नई-नई चीजें सीखने के लिए भी तैयार किया गया। सबसे बड़ी बात यह कि सभी स्कूलों में प्रवेश-उत्सव मनाया गया।

बोथराज
जेबीटी शिक्षक
जीपीएस, वार्ड 10, पानीपत

सत्र नव, उत्साह नव

नए सत्र में सारे बच्चे,
कितने खुश हैं आज।
नया बैग ले नई किताबें,
करते खुद पर नाज।

नई सोच के नए इरादे,
मन में नई तरंग।
निपुण और सक्षम होने की,
सब में जगी उमंग।
खुश लगते हैं वो भी बच्चे,
जो थे तुनक-मिज़ाज।

बुनियादी शिक्षा से होगा,
समग्र नव्य विकास।
नवाचार भी जगा रहा है,
सबके मन में आस।
काम करें जो अन्य भाव से,
उन पर गिरती गाज।

बिना जोश के मन ये लगता,
है कितना बेरंग।
मनोयोग से करें पढ़ाई,
तजकर सब हुड़दंग।
बच्चो सुनो सफलता का बस,
एक यही है राज।

कोई भी बच्चा पढ़ने से,
कहीं न जाए छूट।
शिक्षा से हर बालक का अब,
रिश्ता बने अटूट।
शिक्षा का अधिकार देख लो,
हुआ कारगर आज।

राजपाल सिंह गुलिया (पूर्व शिक्षक)
गाँव- जाहिदपुर, डाकखाना- ऊँटलौधा
तहसील व जिला- झज्जर, हरियाणा

किसी परिचय की मोहताज नहीं हैं शिक्षिका सुमन मलिक

समाज के संवर्धन एवं विकास में एक शिक्षक की अहम भूमिका होती है। वह अपनी ज्ञान गंगा से व्यक्ति, समाज और राष्ट्र का निर्माण करता है। शिक्षक ही विद्यार्थियों में आत्मविश्वास का संचरण करते हैं, जिसके बलबूते पर वे जीवन में अपना मुकाम हासिल करते हैं। शिक्षक हमारे अंदर संस्कारों का सिंचन कर हमें एक मज़बूत आकार प्रदान करते हैं। शिक्षक के उचित मार्गदर्शन से ही हम शिखर तक पहुँच पाते हैं और बुलंदियों की पताका लहराते हैं। शिक्षक ही तो हैं जो हमें जीवन जीने की कला सिखाते हैं।

ऐसी ही एक शिक्षिका हैं जिनका समग्र जीवन समाज के लिए प्रेरणा पुंज व प्रेरणा-स्रोत बना। उन्होंने शिक्षण के क्षेत्र में नित नए आयाम स्थापित किए हैं। कर्तव्यनिष्ठ, विद्यार्थियों के प्रति समर्पित, अनुशासन की प्रतिमूर्ति, नवाचार में दक्ष, अपने विषय में पारंगत श्रीमती सुमन मलिक किसी परिचय की मोहताज नहीं हैं। उनका समग्र जीवन शिक्षण, विद्यार्थियों और समाज के लिए समर्पित है।

सुमन मलिक को को बीते दिनों माननीय राज्यपाल बंडारू दत्तात्रेय के कर-कमलों से शिक्षक दिवस पर राज्य शिक्षक पुरस्कार, 2020 से पुरस्कृत किया गया। साधारण किसान परिवार में जन्म लेने वाली असाधारण शिक्षिका का शैक्षिक सफर सरल-सहज नहीं रहा। उन्होंने अपने परिश्रम, आत्मविश्वास, जज़्बे और हौसले के दम पर स्कूल से राज्य पुरस्कार तक का सफर अनेक बाधाओं को पार करके हासिल किया।

राजकीय उच्च विद्यालय आहुलाना, सोनीपत में गणित अध्यापिका के पद पर कार्यरत सुमन मलिक का जन्म 2 अप्रैल, 1975 को झज्जर जिले के गाँव किलोई में श्री राजेंद्र आर्य के घर हुआ। वह अपने छह भाई-बहनों में चौथे नंबर पर थीं। माता पार्वती ने उदार हृदय से अपनी इस कन्या को न केवल छाती से लगाया, अपितु उच्च शिक्षा दिलाने व समाज में एक सम्मानित स्थान पर विराजमान करने के सपने भी दिखाए। उनकी माता के आदर्श और जज़्बे के कारण सुमन साधारण से असाधारण बनी। उनकी माता की सकारात्मक सोच व प्रयासों के चलते सुमन ने अपने अन्य भाई बहनों के साथ पाँचवीं कक्षा तक की पढ़ाई अपने पैतृक गाँव के सरकारी विद्यालय से प्राप्त की। इसके बाद दसवीं तक की शिक्षा राजकीय उच्च विद्यालय जहाँगीरपुर से ग्रहण की। विद्यालय गाँव से छह किलोमीटर दूर होने के बावजूद भी इनकी हौसलों की उड़ान मंद नहीं हुई। उन्होंने इस विद्यालय के रास्ते को नन्हे-नन्हे कदमों से कदमताल करते हुए कोमल पाँव तले लगातार तीन वर्षों तक रौंद कर पैदल दूरी तय की।

बेटी के जज़्बे, लग्न, मेहनत और पढ़ाई के प्रति लगाव देखते हुए माता-पिता को इनमें सुनहरा भविष्य दिखाई देने लगा। उन्होंने जैसे-तैसे कुछ रुपये जमा करके एक साइकिल खरीद कर दी।

अगले दो वर्ष तक साइकिल की घण्टी और पैडल की धुन में मस्त होकर उन्होंने अपनी पढ़ाई जारी रखी। प्रथम श्रेणी में दसवीं कक्षा उत्तीर्ण करने के पश्चात उच्च शिक्षा कन्या गुरुकुल खानपुर कलाँ सोनीपत से प्राप्त की। शिक्षक बनने के लिए उन्होंने जेबीटी में डिप्लोमा ग्रहण किया।

इनके जीवन की नई शुरुआत 12 फरवरी, 1996 को हुई जब ये रवींद्र मलिक के आँगन की शोभा बढ़ाने के लिए उनकी अर्धांगिनी बनकर उनके जीवन में कदम रखती हैं। सकारात्मक सोच, नारी के प्रति उचित दृष्टिकोण रखने वाले हमसफर का साथ पाकर सुमन मलिक का व्यक्तित्व निखार लेने लगा। हर कदम पर अपने जीवन साथी का संग पाकर वे बहुत प्रफुल्लित हैं। उनकी क्षमताएँ विकसित होकर दुगनी हो गईं । उन्होंने हर क्षेत्र में बेहतरीन प्रदर्शन किया। वैवाहिक जीवन उनके शिक्षण क्षेत्र में बाधा बनने की बजाय उनकी शक्ति बना।

शिक्षा विभाग में इनका सफर 19 दिसंबर, 1997 से एक प्राथमिक शिक्षिका के रूप में शुरू हुआ। इन्होंने इस

कामयाबी को ही अंतिम नहीं माना, यह तो उनके लिए महज एक शुरुआत थी। घर पर रहते हुए इन्होंने दूरवर्ती माध्यम से शिक्षा में स्नातक व प्रभाकर, स्नातकोत्तर हिंदी व अंग्रेज़ी परीक्षाएँ प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण कीं। विद्यालय में बच्चों को पढ़ाना, घर के सभी कामकाज सँभालना और अपने परिवार की देखभाल इनकी उच्च शिक्षा में कतई आड़े नहीं आई। विपरीत परिस्थितियों से जूझते हुए ये शिक्षा के क्षेत्र में निरंतर प्रगतिशील रहीं। इन्होंने 1 अक्टूबर, 2008 को प्राथमिक अध्यापिका से गणित अध्यापिका के पद पर पदोन्नति प्राप्त की। उसके बाद बहुत ही रुचिकर तरीके से गणित अध्यापन का कार्य करते हुए शिक्षा विभाग की लगभग सभी योजनाओं में बढ़-चढ़कर उत्साहपूर्ण हिस्सेदारी दी व अपनी सकारात्मक छाप छोड़ी।

इन्होंने गणित विषय को मनोरंजन पूर्ण तरीके से खेल-खेल के माध्यम से पढ़ाया है। इसी कारण इनके विद्यार्थी गणित को बोझिल विषय नहीं मानते। गणित विषय को रुचिकर बनाने के लिए इन्होंने पावर पॉइंट प्रेजेंटेशन, स्मार्ट बोर्ड, रुचिकर वीडियो, मॉडल, गूगल क्विज़, ठोस वस्तुओं के माध्यम से अवधारणा स्पष्ट करना, सहायक सामग्री आदि का सहारा लिया है। क्विज इनकी मनपसंद विधा है, जिसमें ये पारंगत हैं। इन्होंने विद्यालय स्तर से जिला स्तर पर अनेक क्विज़ प्रतियोगिताओं का सफल संचालन भी किया है।

शिक्षा विभाग के विभिन्न कार्यक्रमों और परियोजनाओं में इन्होंने बढ़-चढ़कर भाग लिया है। सक्षम कार्यक्रम को धरातल पर लागू करना, क्विज क्लब, गणित प्रश्न-बैंक निर्माण, एससीईआरटी से एजुसेट के लिए गणित शिक्षण से संबंधित वीडियो तैयार करने का कार्य, एनएएस का प्रश्न बैंक, कोरोना काल में मुख्यमंत्री ऑनलाइन शिक्षण कार्यक्रम के लिए वीडियो तैयार करना आदि इनकी विशेष उपलब्धियाँ रहीं।

जब भी हम इन्हें शिक्षण कार्य करते देखते हैं तो ये यथार्थ रूप में दैनिक जीवन से जोड़कर पढ़ाती हैं। ये अपने अध्यापन कार्य को केवल कक्षा कक्ष, चॉक-बोर्ड तक सीमित न रखकर रुचिकर तरीके से करवाने के लिए विभिन्न मॉडलों का प्रयोग करती हैं, ताकि बच्चों में सीखने की क्षमता विकसित हो सके। अनेक बार इन्हें विद्यालय के विद्यार्थियों के साथ कक्षा-कक्ष से बाहर स्कूल की टाइलों को नापते, तो कभी पेड़ों की ऊँचाई को मापते हुए देखा गया है। यह इनकी अध्यापन के प्रति तन्मयता व समर्पण-भाव को दर्शाता है।

सामाजिक सेवा के क्षेत्र में भी इनका कोई सानी नहीं है। ये 2005 से लगातार रक्तदान करती आ रही हैं। उन्होंने अब तक 15 बार रक्तदान किया है। पर्यावरण सुरक्षा के लिए नियमित रूप से विद्यार्थियों को जागरूक करती हैं। समय-समय पर वृक्षारोपण कार्यक्रम में बढ़-चढ़कर भाग लेती हैं तथा विद्यार्थियों को पौधे लगाने के लिए प्रोत्साहित करती

हैं। स्काउटिंग, साहसिक गतिविधियों में भी इन्होंने बढ़-चढ़कर भाग लिया है। समय-समय पर जरूरतमंद विद्यार्थियों को वर्दी, जूते, लेखन सामग्री अपनी जेब से प्रदान करती हैं।

इनके मार्गदर्शन में इनके विद्यार्थियों ने लीगल लिटरेसी, कला-उत्सव, एनएमएमएस परीक्षा, प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता, गणित मॉडल प्रतियोगिता आदि में अपना परचम लहराया है।

संवेदनशील सुमन गज़ब की साहित्यकार भी हैं। इनके दो काव्य संग्रह 'यादों का झरोखा' , 'स्त्री अस्तित्व का संघर्ष' प्रकाशित हो चुके हैं। इनके शैक्षिक लेख शिक्षा-विभाग की प्रतिष्ठित पत्रिका 'शिक्षा सारथी' में समय-समय पर प्रकाशित होते रहते हैं। इनके कई शोध-पत्र विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुके हैं। विद्यार्थियों में रचनात्मकता विकसित करने हेतु ये 'बाल-मंथन' पत्रिका की संरक्षक सदस्या हैं, जिसके माध्यम से ये सरकारी स्कूलों के बच्चों की रचनाएँ प्रकाशित करने में अहम भूमिका अदा करती हैं।

इनकी शैक्षणिक और सामाजिक उपलब्धियों के कारण इन्हें विभाग द्वारा जिला और राज्य स्तर पर अनेक बार सम्मानित किया जा चुका है। अनेक सामाजिक संगठन भी इन्हें पुरस्कृत कर चुके हैं।

राज्य शिक्षक पुरस्कार मिलने पर सुमन मलिक कहती हैं कि पुरस्कार जिम्मेदारियों का अहसास करवाते हैं। ये हमारी उपलब्धियों का सबूत नहीं हैं।

सुमन मलिक जैसी बहुमुखी प्रतिभा की धनी शिक्षिका शिक्षा-विभाग की शान हैं। शिक्षक जगत् ऐसे अध्यापकों पर गर्व करता है। निश्चित तौर पर एक शिक्षक और मार्गदर्शक के रूप में इनका जीवन समाज के लिए प्रेरणापुंज बनकर सदैव आलोकित करता रहेगा।

डॉ. सुषमा जाखड़
राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय मकड़ाना
खंड- बौन्द कलाँ, चरखी दादरी, हरियाणा

प्यारे बच्चो!

'बाल सारथी' आपका अपना पन्ना है। हम चाहते हैं कि इसमें आपकी रचनाओं को स्थान दिया जाए। आपने कोई मौलिक कविता, कहानी या अन्य विधा की रचना लिखी हो तो अपने अध्यापक की सहायता से हमें ई-मेल या डाक द्वारा भेजें। आपकी रचनाओं को प्रकाशित करके हमें प्रसन्नता मिलेगी।

'बाल सारथी' आपको कैसा लगा, जरूर लिखना। अगले अंक में ज्ञान-विज्ञान और मनोरंजन की सामग्री लेकर फिर आपसे मिलूँगी।

- आपकी यामिका दीदी

तो कितना अच्छा होता

अगर परीक्षा न होती तो
खूब चैन से मैं सोता।
तो कितना अच्छा होता।

पढ़ने की चिंता में फिर क्यों,
सूख-सूख काँटा होता ।
न पढ़ने पर पापा ने भी,
क्यों मुझको डाँटा होता।
बार-बार इस डर के मारे,
छुप-छुप कर मैं क्यों रोता।

नहीं सुबह उठने का झंझट,
मुझको रोज-रोज होता।
सुबह सुबह के स्वप्न टूटने,
का न मुझको दुख होता।
इन प्यारे से सुखद पलों को,
नहीं कभी भी मैं खोता।
तो कितना अच्छा होता।।

श्याम सुन्दर श्रीवास्तव 'कोमल'
व्याख्याता हिन्दी
लहार, भिण्ड, मप्र

गणित-पहेलियाँ

1. उस कोण की माप बताओ,
जो समकोण कहलाता है।
ध्यान लगाकर बोलो प्यारे
गणित से अपना नाता है।

2. ऐसा कोण निराला है,
सरल कोण कहलाता है।
माप बताओ प्यारे बच्चो,
बोलो जो कुछ आता है।

3. उन कोणों को क्या कहते,
0-90 अंश बीच जो रहते।
ध्यान लगाकर झटपट बोलो,
निज बुद्धि का ताला खोलो।

4. मुझको कोई नाप न पाये,
दोनों ओर से बढ़ती जाऊँ।
गणित की आकृति मुझको समझो।
झट बतलाओ क्या कहलाऊँ।

5. कुछ संख्याएँ ऐसी होतीं,
गिनने के जो आतीं काम।
पहली संख्या एक है बच्चो,
तुम बतलाओ उनका नाम।

6. स्वयं या एक से भाजित होती,
ऐसी संख्या अजब निराली।
और किसी से नहीं है भाजित,
बोलो गुल्लो भोली-भाली।

7. रहूँ अकेले मूल्य नहीं,
लगूँ साथ तो मूल्य बढ़ाऊँ।
भारत की हूँ खोज निराली,
बोलो झटपट क्या कहलाऊँ ।

8. तीन खम्ब जब मिले समान,
बने बीच में कोण समान।
इस आकृति का नाम बताओ,
तब ही बच्चो टॉफी पाओ।

9. दो भुजा दो कोण समान,
झट बतलाओ उसका नाम।
तीन भुजा उसमें हैं आएँ ,
बोलो बच्चो क्या कहलाये?

10. तीन भुजायें जब जुड़ जाएँ,
बोलो बच्चो क्या कहलायें?
न भुजा समान, न कोण समान,
नाम बताओ करके ध्यान।

उत्तरमाला - 1- 90 अंश, 2- 180 अंश 3- न्यून कोण, 4- रेखा, 5- प्राकृतिक संख्या, 6- रूढ़ि संख्याएँ 7- शून्य, 8- समबाहु त्रिभुज, 9- समद्विबाहु त्रिभुज 10- विषमबाहु त्रिभुज

डॉ. कमलेन्द्र कुमार श्रीवास्तव
राव गंज कालपी
ज़िला-जालौन, उत्तर प्रदेश-285204.

साइकिल मेरी छोटी-सी है

दिखती बड़ी कमाल
सीधी -सीधी चलती लेकिन
कभी बदलती चाल

पहिये इसके काले हैं ये
नीली है कुछ लाल
धोकर इसको मैं चमकाता
रखूँ सदा सँभाल

दादा जी ये जन्मदिवस पर
लाए थे उपहार
इसमें मुझको दिखता अपने
दादा जी का प्यार

सुनीता काम्बोज
संत लौंगोवाल अभियांत्रिकी एवं प्रौद्योगिकी संस्थान
लौंगोवाल ,पंजाब -148106

शिक्षा जीवन का आधार

पढ़ें-पढ़ाएँ, ज्ञान बढ़ाएँ
शिक्षा जीवन का आधार।
आँखों में पलते सपनों को
शिक्षा करती है साकार।

व्यक्ति, समाज, देश हो विकसित,
आवश्यक है होना शिक्षित,
अँधियारे में जगमग लौ-सी
शिक्षा फैलाती उजियार।

पढ़ना-लिखना, जोड़-घटाना
सिखलाता है कष्ट मिटाना,
बहु उपयोगी विद्या-धन है
शिक्षा है अमूल्य उपहार।

रोटी, कपड़ा, घर जैसी निधि,
पा जाने की बतलाती विधि,
रचती है उज्ज्वल भविष्य को
शिक्षा देती सुसंस्कार।

निज भाषा में करें पढ़ाई,
पाएँगे यश, मान, बड़ाई,
बन जाएँगे सभ्य नागरिक
शिक्षा है मौलिक अधिकार।
शिक्षा जीवन का आधार।

-गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र'
117, आदिलनगर, विकासनगर
लखनऊ-226022, उप्र

किन इकाइयों से मापा जाता है तापक्रम

प्यारे बच्चो! कक्षा में शिक्षक हमारे शरीर का सामान्य तापमान 37 डिग्री सेल्सियस बताते हैं। जब आप डॉक्टर के पास जाते हैं तो वह कहता है कि इसे तो 101 बुखार है, तुरंत दवाई लेनी पड़ेगी। आप भी सोचते होंगे कि कहाँ 37 डिग्री और कहाँ 101 डिग्री। लेकिन हम आपको बतायें कि शिक्षक और डॉक्टर दोनों ही अपनी-अपनी जगह ठीक हैं। शिक्षक ने जो तापमान बताया वह सेल्सियस में था और डॉक्टर जो तापमान बता रहे हैं वह फाहरेनहाइट में है। दरअसल तापक्रम को मापने की तीन इकाइयाँ हैं- सेल्सियस, फ़ाहरेनहाइट और केल्विन।

सेल्सियस को पहले सेंटीग्रेड भी कहा जाता था। इसको एंडर्स सेल्सियस ने ईजाद किया था, जो स्वीडन के थे। फ़ाहरेनहाइट पैमाना अमेरिका में खूब प्रचलित है। इस इकाई को जर्मनी के वैज्ञानिक सर गैब्रिएल डेनियल फाहरेनहाइट ने ईजाद किया था। केल्विन इकाई रसायन विज्ञान में वैज्ञानिक शोध में पैमाना के रूप में किया जाता है, इसे परम तापक्रम पैमाना भी कहा जाता है। इसको ब्रिटिश के वैज्ञानिक विलियम थॉमसन लार्ड केल्विन ने ईजाद किया था।

अगर सेल्सियस को केल्विन में बदलना हो तो हम सेल्सियस में 273 को जोड़ देते हैं । ज़ीरो डिग्री सेल्सियस 273 केल्विन के बराबर होता है। 0 डिग्री सेल्सियस पर जल बर्फ में परिवर्तित होता है। -273 केल्विन को शून्य तापमान कहा जाता है।

सुनील अरोड़ा, पंचकूला, हरियाणा

पाने से पहले देना सीखो

बच्चो! नेता जी सुभाषचंद्र बोस ने नारा दिया था-'तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आज़ादी दूँगा'। लेकिन अगर ध्यान से सोचें तो यह बात सिर्फ नेता जी ने ही नहीं कही, बल्कि कुदरत का कण-कण हमसे यही कहता है-

खेत कहता है- 'तुम मुझे बीज दो, मैं तुम्हें फसल दूँगा।'
पौधा कहता है- 'तुम मुझे पानी दो, मैं तुम्हें फल-फूल दूँगा।'
दीपक कहता है- 'तुम मुझे तेल दो, मैं तुम्हें रोशनी दूँगा।'
गाय कहती है- 'तुम मुझे चारा दो, मैं तुम्हें दूध दूँगी।'
पेट कहता है- 'तुम मुझे भोजन दो, मैं तुम्हें ताकत दूँगा।'
आँखें कहती हैं- 'तुम मुझे अच्छे दृश्य दो, मैं तुम्हें विचार दूँगी।'
बुज़ुर्ग कहते हैं- 'तुम हमें सम्मान दो, हम तुम्हें आशीर्वाद देंगे।'
भगवान कहते हैं- 'तुम दूसरों के काम आओ, मैं तुम्हें अच्छा भाग्य दूँगा।'

प्यारे बच्चो! ये तो थोड़े से उदाहरण हैं, ध्यान से देखो तो संसार की हर चीज़ हमसे यही कहती है कि अगर कुछ पाना चाहते तो पहले देना सीखो।

प्रशांत अग्रवाल
प्राथमिक विद्यालय, डहिया, बरेली, उप्र

खेल-खेल में विज्ञान

दर्शन लाल बवेजा

आदरणीय अध्यापक साथियो व उत्साही विद्यार्थियो, इस अंक में खेल-खेल में विज्ञान शृंखला के अंतर्गत प्रस्तुत हैं कुछ और शून्य व कम लागत से तैयार रुचिकर कक्षाकक्ष विज्ञान गतिविधियाँ-

1. मानव कंकाल तन्त्र के प्रति उत्सुकता-

कक्षा 6 में शरीर में गति पाठ पढ़ाते वक्त सुना कि विद्यार्थी कंकाल-तंत्र के चित्र को देखकर उसे भूत कह रहे थे। विद्यार्थियों की उत्सुकता को देखते हुए जीव-विज्ञान प्रयोगशाला से मानव कंकाल-तंत्र का छोटा मॉडल लाकर उन्हें दिखाया गया। कक्षा 6 के विद्यार्थियों ने कंकाल-तंत्र के मॉडल को छूकर देखा और मानव कंकाल-तंत्र के बारे में जाना। विद्यार्थी खुसफुसा रहे थे कि देखा हमारे शरीर में इतनी सारी हड्डियाँ होती है? विद्यार्थियों को अस्थि, उपास्थि व संधियों के बारे में समझाया गया। कान के पिन्ने को मोड़ कर उपास्थि का आभास करवाया गया। मानव कंकाल के रोचक तथ्य बताए गए तो हैरानी की सीमा नहीं थी। उन्हें बताया गया कि मनुष्य के जन्म के समय 300 हड्डियाँ होती हैं, जो बच्चे के बड़े होने पर घटकर 206 रह जाती हैं। हड्डियों के अध्ययन को ऑस्टियोलॉजी कहा जाता है। उपास्थि शरीर के इन भागों में होती है जैसे कान के बाहरी हिस्से, नाक की नोक, कंठच्छद, लंबी अस्थियों के छोरों पर, पसलियों के निचले हिस्से पर और श्वसन-नली के छल्लों में।

2. असंपर्क बलों की गतिविधि (संतुलित चुंबके)-

असंपर्क बल एक बल है जो किसी वस्तु पर भौतिक रूप से संपर्क में आए बिना कार्य करता है। सबसे परिचित असंपर्क बल गुरुत्व बल है जो वस्तुओं को वजन प्रदान करता है। इसके विपरीत संपर्क बल वह बल है जो भौतिक रूप से उसके संपर्क में आने वाली वस्तु पर कार्य करता है।

एक चुंबक दूसरे चुंबक पर बगैर संपर्क में आए ही बल लगा सकता है। चुंबक द्वारा लगाया गया बल असंपर्क बल का एक उदाहरण है। इस गतिविधि को बनाने के लिए विद्यार्थियों ने आडियो स्पीकर से प्राप्त की गई एक बड़ी वलयाकार चुंबक को एक गत्ते पर चिपकाया और दूसरी वलयाकार चुंबक को गत्ते के चारों किनारों पर धागों से बाँधकर

(समान ध्रुव प्रतिकर्षित करते हैं गुण के आधार पर) इस प्रकार समायोजित करके संतुलित किया कि वह चुंबक दूसरी चुंबक के ऊपर हवा में तैरने लगी। इस प्रकार उन्होंने असंपर्क बलों का बेहतरीन उदाहरण पेश किया और इस गतिविधि को बार-बार सभी ने करके देखा।

3. असंपर्क बलों की गतिविधि (घूमता स्ट्रॉ)-

असंपर्क बलों को प्रदर्शित करता एक दूसरा गतिविधि परक उदाहरण कक्षा आठ के विद्यार्थियों के समक्ष प्रस्तुत किया गया। एक प्लास्टिक की बोतल के ऊपर एक प्लास्टिक का स्ट्रॉ रखा। एक गुब्बारे को फुला कर एक विद्यार्थी जिसने बालों में तेल न लगाया हो अर्थात उसके सिर के सूखे बालों के ऊपर रगड़ते हैं जिससे गुब्बारा आवेशित हो जाता

है। अब इस आवेशित गुब्बारे को जैसे ही स्ट्रॉ के किसी भी एक किनारे के पास लाएं तो स्ट्रॉ गुब्बारे से प्रतिकर्षित होकर घूमने लग जाता है। गौरतलब है कि यहाँ गुब्बारे और स्ट्रॉ के बीच में कोई भी बहुत भौतिक संपर्क नहीं होता। स्थिर वैद्युत बल आवेशों के आकर्षण/प्रतिकर्षण से असंपर्क बल उत्पन्न करता है जिस कारण हम इस प्रकार स्ट्रॉ को कई चक्कर तक घुमा सकते हैं।

4. नियमित व अनियमित परावर्तन-

नियमित परावर्तन तब होता है जब प्रकाश किसी चिकनी व चमकदार सतह पर पड़ता है और आपतन की दिशा में ही परावर्तित होता है। इसके उलट अनियमित परावर्तन तब होता है जब प्रकाश खुरदरी या उबड़-खाबड़, परन्तु चमकदार सतह पर पड़ता है और आपतन की दिशा में ही परावर्तित होता है। इस गतिविधि को करने के लिए एक समतल दर्पण और एक एल्युमीनियम फॉयल का टुकड़ा लिया गया। एल्युमिनियम फॉयल के टुकड़े को मरोड़ कर अथवा सलवटें डाल कर उसकी सतह को खुरदरा बना दिया। एक लेजर टॉर्च के द्वारा बारी-बारी दोनों की सतहों पर लेजर बीम आपतित करके उसे परावर्तित किया और उसकी परावर्तित किरण को स्क्रीन लगाकर रोका गया। अब विद्यार्थियों ने देखा कि समतल सतह से हुए परावर्तन में लेजर बीम का केवल एक बिंदु मात्र दिखाई देता है, जबकि फॉयल से हुआ परावर्तन फैले हुए प्रकाश के रूप में नज़र आता है। इस प्रकार विद्यार्थी नियमित व अनियमित परावर्तन को सीख गए।

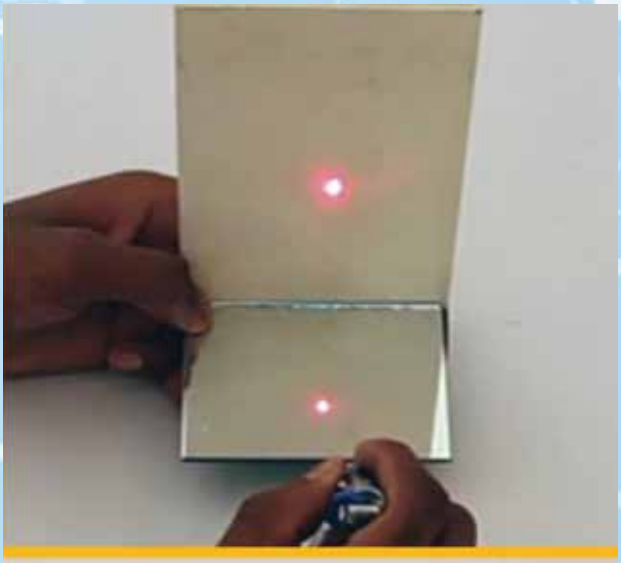

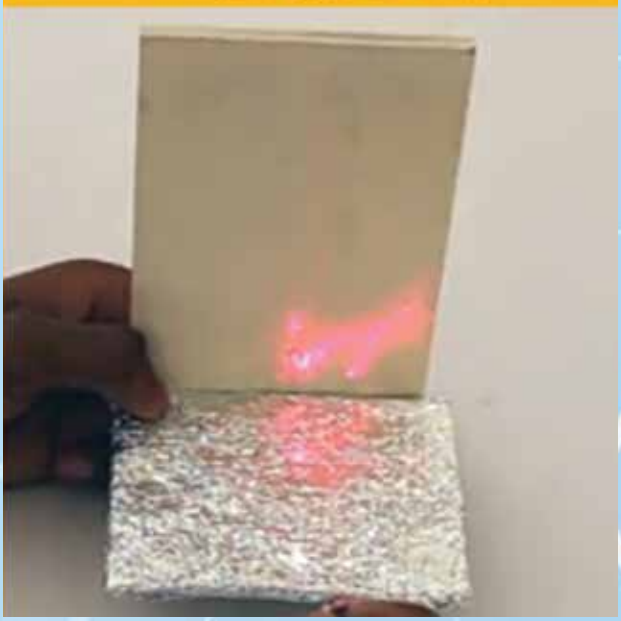

5. पानी की ताकत ने सिक्के रोके-

जल के सामान्य गुणों के बारे में पढ़ाते हुए अचानक एक वाक्य की तरफ विद्यार्थियों का ध्यानाकर्षण हुआ। वह वाक्य था कि पानी पानी की ओर आकर्षित होता है व पानी अन्य पदार्थों की ओर आकर्षित होता है। इन गुणों को क्रमशः जल का ससंजन व आसंजन गुण कहते हैं। दो समान प्रकार के कणों या सतहों के एक दूसरे से चिपकने की प्रवृत्ति को

ससंजन कहते हैं। इसी गुण के कारण पानी की बूँदे बनती हैं/गोलाकार बनती हैं। दो भिन्न प्रकार के कणों या सतहों के एक दूसरे से चिपकने की प्रवृत्ति को आसंजन कहते हैं। इस गुण को प्रयोग द्वारा समझने के लिए विद्यार्थियों ने एक प्लास्टिक का विजिटिंग कार्ड (आधार कार्ड जितने आकार का) लिया और एक काँच के गिलास में ऊपर तक पानी भर लिया। कार्ड का दो तिहाई भाग गिलास के किनारे से अंदर और शेष एक चौथाई भाग किनारे से बाहर रखा। कार्ड को रखते ही पाया कि कार्ड को पानी ने एकदम अपने साथ चिपका लिया। उस चिपक की ताकत को नापने के लिए विद्यार्थियों ने गिलास के किनारे से बाहर की तरफ वाले कार्ड के भाग पर एक-एक करके 2-3 सिक्के रखे, लेकिन पानी ने कार्ड को नहीं छोड़ा। यही क्रियाकलाप हार्ड पेपर कार्ड से भी करके देखा गया। जो प्लास्टिक कार्ड जितना मज़बूत नहीं था, इसलिए मुड़ गया, परन्तु पानी ने अपनी चिपक से उसे फिर भी नही छोड़ा। प्रकृति में पानी के इन दोनों गुणों के बहुत से उदाहरण मौजूद है।

अच्छा, तो आदरणीय अध्यापक साथियो व प्रिय विद्यार्थियो आगामी अंक में फिर से मिलते हैं नई विज्ञान गतिविधियों के साथ। आशा है आप उनको भी पसंद करेंगे।

साइंस मास्टर/ ईएसएचएम
राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय दामला
खंड-जगाधरी, यमुनानगर, हरियाणा

Take The Challenge- चुनौती

आइये कल्पना करें कि हम एक फर्श या आंगन क्षेत्र में टाइल लगा रहे हैं।
मान लीजिए क्षेत्रफल वर्गाकार है और माप 3 × 3 का है।
हमारे पास टाइलें तीन आकारों में हैं : 1 × 1 वाली, 2 × 2 वाली और 3×3 वाली।
जगह को पूरी तरह से ढकने के लिए, इन टाइलों की किसी भी व्यवस्था में रखा जा सकता है।
हालाँकि, किसी भी टाइल को काटा नहीं जा सकता है।

आपकी चुनौती के लिए, यह पता लगाइए – आपके द्वारा रखे गए टाइलों के तरीके से टाइलों की कुल संख्या कितनी बन रही है ?
उदाहरण के लिए, 3 × 3 वर्ग के लिए आप इसका उपयोग करके कर सकते हैं-

9 टाइल्स 1 × 1 माप वाली,

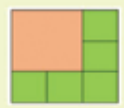

1 टाइल 2×2 माप वाली, और 5 टाइल्स 1×1 वाली,
या

1 टाइल 3 ×3 माप वाली।

टाइलों की सबसे छोटी संख्या एक है और सबसे बड़ी संख्या नौ है।

अब कल्पना कीजिए कि आपके पास ऐसी भी टाइलें हैं जो 4 ×4 माप वाली हैं। 4 × 4 वर्गाकार आँगन के लिए आप कितनी टाइलों का उपयोग कर सकते हैं? यदि आपके पास 5 × 5 माप वाली टाइलें भी हों , तो आप 5 × 5 वर्गाकार आंगन के लिए कितनी टाइलों का उपयोग कर सकते हैं?

इस चुनौती के अंतिम भाग में आप ने तीनों भाग 3 × 3, 4 ×4 और 5 ×5 में प्रत्येक के लिए मिले उत्तरों की सावधानीपूर्वक जांच करनी है।
अब आप जो देखते हैं, उसके बारे में अपने साथियों से चर्चा करें।
आप क्या सोचते हैं कि क्या होगा यदि कोई 6 × 6 और 7 × 7 वाले माप वाली टाइल्स का प्रयोग करना हो ?

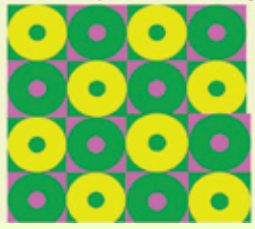

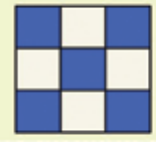

प्रस्तावित(suggested) तरीका : बोर्ड या digital बोर्ड पर यह समस्या दिखाई जा सकती है। टास्क को समझाएं और बच्चों से कहें कि वे 3 × 3 वर्गाकार फर्श को कैसे टाइल कर सकते हैं ? वे मिनी-व्हाइटबोर्ड पर चित्र भी बना सकते हैं। अपने विचारों को बोर्ड पर साझा करें, जिससे छात्र पूरी तरह से संदर्भ से परिचित हो जाएं।

Note : इस challenge को क्यों करें?

यह समस्या विद्यार्थियों के लिए समस्या समाधान कौशल विकसित करने की एक अच्छी शुरुआत है। यह बच्चों को व्यवस्थित रूप से काम करने, पैटर्न ढूंढने, संदेह और निर्णय करने के लिए प्रोत्साहित करता है और क्षेत्रफल और इससे संबंधित ज्ञान को creativity के साथ प्रयोग करने के लिए प्रेरित करता है।

बच्चों को ध्यान दिलवाएं - कुछ टाइल की संख्या असंभव क्यों हैं, फिर उन्हें 6x6 और 7x7 के बारे में अनुमान लगाने पर ध्यान केंद्रित करने को कहें। छात्रों को सोचने और एक दूसरे से बातचीत करने के लिए समय दें, फिर पूर्ण चर्चा कक्षा में ले जाएं, बच्चों को अपने विचार रखने दें।

मुख्य प्रश्न- क्या आप हर बार एक अलग संख्या की टाइल ही ले रहे हैं ?
6x6 और 7x7 के लिए टाइलों की अधिकतम और न्यूनतम संख्या क्या होगी?
आप कैसे जानते हैं कि 3x3, 4x4 और 5x5 में क्या समान है? क्या आप इसे 6x6 और 7x7 पर लागू कर सकते हैं?

पहाड़ों के पहाड़
Fluency with Numbers Using Flexibility

रीजनिंग स्ट्रेटेजीज गुणा के तथ्यों में प्रवाह लाने के लिए अत्यंत आवश्यक हैं। इस अंक में 9 के पहाड़े का प्रयोग एक रीजनिंग स्ट्रेटेजीज के रूप में करने के लिए, इसमें छिपे पैटर्न पर चर्चा करने के लिए कर रहे हैं –

9 के पहाड़े में गुणनफल तथ्य सबसे बड़े होने के बावजूद सीखने में सबसे आसान हैं क्योंकि 9 के पहाड़े में कई पैटर्न तथा तर्क (reasoning strategies) छुपे हैं।

* सबसे पहले, 9 के गुणज को प्राप्त करने के लिए बच्चे आमतौर पर 10 के पहाड़े को प्रयोग में लाते हैं । उदाहरण के लिए मैंने एक बच्चे से पूछा कि 3 बार 9 कितना होगा ? बच्चे ने 3×10 = 30 का प्रयोग करते हुए कहा," क्योंकि 3 × 10 = 30 है और 3 × 9 इससे सिर्फ 3 कम है इसलिए 30 – 3 = 27 होगा। यदि बच्चे इस प्रकार की तर्क रणनीति का प्रयोग करते हुए उत्तर देते है तो अवश्य ही उनकी नंबर sense का विकास हो रहा है।

यदि आपको लगता है कि अभी बच्चे इस प्रकार की स्ट्रेटेजीज का प्रयोग नहीं कर रहे तो उन्हें ठोस वस्तुओं की मदद से इसे करने के मौके दिए जा सकते है। इंटरलॉकिंग cubes इसमें काफी मददगार हो सकती हैं अथवा किसी संदर्भ जैसे कि 10 व्हीव्हीलर (ऑटो) के पहियों की संख्या 30 है तो 9 व्हीव्हीलर के कितने पहिये होंगे, जैसे प्रश्नों को शामिल कर इस स्ट्रेटेजी पर बच्चों का ध्यान खीचा जा सकता है।

* दूसरा, नौ के गुणा के तथ्यों में कुछ दिलचस्प पैटर्न शामिल हैं जो गुणन को खोजने की ओर ले जाते हैं। बच्चों को इसका पता लगाने और खोजने के लिए प्रोत्साहित करें।

उदाहरण के लिए-

बच्चों से, प्रत्येक तथ्य को क्रम में रिकॉर्ड करके पैटर्न ढूँढने को कहें।

(9×1 = 9, 9×2 = 18, ... 9×9 = 81)

×	0	1	2	3	4	5	6	7	8	9
0										0
1										9
2										18
3										27
4										36
5										45
6										54
8										72
9	0	9	18	27	36	45	54	63	72	81

* बच्चे अनेक प्रकार के पैटर्न खोज सकते हैं जैसे –

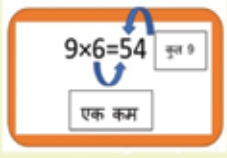

गुणनफल का दहाई का अंक हमेशा एक गुरंखंड (9 को छोड़ कर)से एक कम होता है। गुणनफल में दोनों अंकों का जोड़ हमेशा 9 रहता है। अतः गुणनफल ज्ञात करने के लिए इस पैटर्न का प्रयोग किया जा सकता है

9×8 के लिए गुणनफल होगा – 8 से एक कम – 7 जो कि दहाई का अंक होगा और 9 बनाने के लिए 7 में 2 जोड़ना होगा। इसलिए 9×8 = 72 हुआ।

* पैटर्न के आधार पर, कुछ बच्चों ने उंगलियों का उपयोग करते हुए एक तरीका ढूँढा –

दोनों हाथों को ऊपर उठाएं।

अपने बाएं हाथ की कनिष्का (लिटिल फिंगर) से गिनना शुरू करो, उदाहरण के लिए, 9×4 के लिए आप चौथी उंगली पर जाओ और इसे नीचे झुकाओ।

अपनी उंगलियों को देखें। आपके पास है-

मुड़ी हुई उंगली के बाईं ओर तीन 3 और दाहिनी ओर छः

तो हल आया = 36.

पैटर्न पर चर्चा करने के बाद, यह भी पता करना जरुरी है कि यह पैटर्न कैसे काम करता है क्योंकि वैचारिक संबंध को देखना आसान नहीं है। इसलिए बच्चों को यह सोचने के लिए चुनौती दें कि यह पैटर्न क्यों/ कैसे काम करता है।

यदि आप या आपके विद्यार्थी और नए पैटर्न खोजें या पता लगा पायें कि ऊपर दिए गए पैटर्न या उनके द्वारा खोजे गए पैटर्न क्यों काम कर रहे है तो हमारे साथ अवश्य सांझा करें।

Ideating team-Mr. Sunil Bajaj, Dr. Jasneet Kaur SCERT, Haryana

2023
अप्रैल माह
के त्यौहार व विशेष दिवस

1 अप्रैल - एप्रिल फूल
4 अप्रैल- महावीर जयंती
7 अप्रैल- गुड फ्राइडे
5 अप्रैल - राष्ट्रीय समुद्री दिवस
7 अप्रैल- विश्व स्वास्थ्य दिवस
10 अप्रैल- विश्व होम्योपैथी दिवस
11 अप्रैल- राष्ट्रीय सुरक्षित मातृत्व दिवस
13 अप्रैल- जलियाँवाला बाग नरसंहार दिवस (1919)
14 अप्रैल- बैसाखी, डॉ.अम्बेडकर जयंती
18 अप्रैल- विश्व विरासत दिवस
22 अप्रैल- विश्व पृथ्वी दिवस
22 अप्रैल- परशुराम जयंती, ईद-उल-फित्तर,
23 अप्रैल- विश्व पुस्तक और कॉपीराइट दिवस
24 अप्रैल- राष्ट्रीय पंचायतीराज दिवस
25 अप्रैल- विश्व मलेरिया दिवस
26 अप्रैल- विश्व बौद्धिक संपदा दिवस
29 अप्रैल- अन्तरराष्ट्रीय नृत्य दिवस
30 अप्रैल- आयुष्मान भारत दिवस

'शिक्षा सारथी' का यह अंक कैसा लगा? अपनी राय, विचार या सुझाव हमें अवश्य लिखें। लेखकों व शिक्षाविदों से अनुरोध है कि शिक्षा जगत् से जुड़े विषयों, योजनाओं, मुद्दों से संबंधित रचनाएँ व लेख हमें भेजें। अपने-अपने क्षेत्रों में होने वाली शिक्षा जगत की गतिविधियों की रिपोर्ट भी हमें भेजें। हमारा पता- शिक्षा सारथी, तृतीय तल, शिक्षा सदन, सैक्टर-5, पंचकूला।
मेल भेजने का पता-
shikshasaarthi@gmail.com

Assessments in NIPUN Bharat

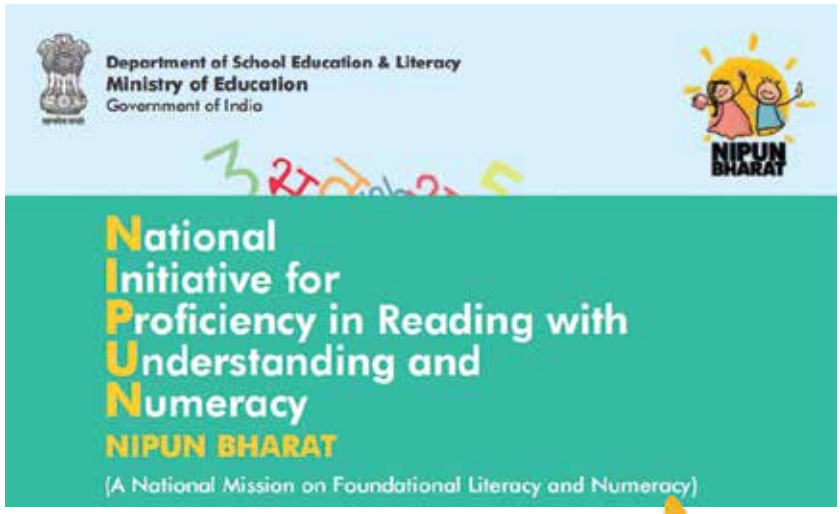

Sambhrant

Chavi Mittal

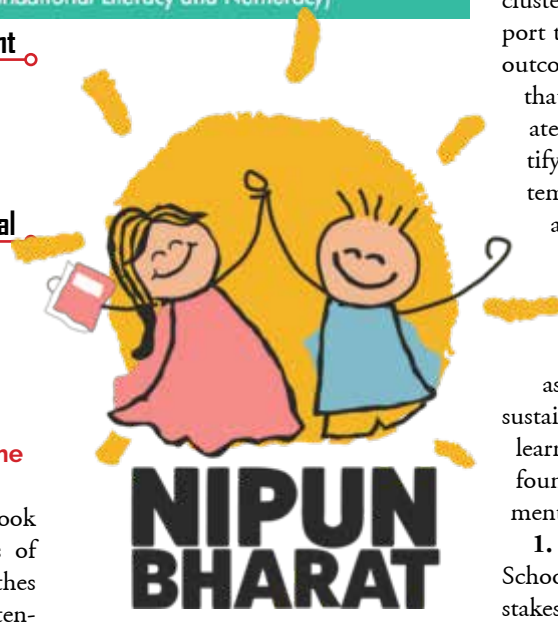

How does one know that it is time to clean up their house?

Start with the sight test - Look around, and you will find traces of dust. There could be a pile of clothes lying on the chair that needs attention. Perhaps, the bed cover needs to be changed? Once you find these indicators, you know it is time to clean up. Identifying the next steps then becomes rather easy - wipe off the dust, fold the clothes and put them in the almirah, and change the bed cover. No government regulations need to be followed or forms to be filled! With cleaning, this system of self-conducted subjective assessment and remedial action works just fine, however, in education, the assessments need to be more objective.

Assessments in education are an integral part of instruction, as they determine whether or not the goals of education are being met. Assessments affect decisions about student advancement, instructional needs, curriculum, goal setting, and, in some cases, funding. Assessments inspire us to ask hard questions like - "Are we teaching what we think we are teaching?", "Are students learning what they are supposed to be learning?", "Which classrooms/ clusters/ districts need additional support to achieve their expected learning outcomes?". It is, thus, safely assumed that assessments in education generate the most critical proxies to identify the health of a system, the system being a class, a school, a district, a state, or a nation.

The NIPUN Bharat mission guidelines, 2021, impress upon the importance of building systems that use assessments for continuous and sustained improvement in student learning. The guidelines state that in foundational grades (1-3), the assessments should be of two types:

1. **School-based assessments:** School-based assessments are low-stakes, census-level (conducted for each student) regular assessments for students, and are conducted by the teachers. These assessments evaluate students' performance on a recently taught competency/ set of competencies, while the findings from the assess-

ments help the teachers to remediate as per individual student needs. To keep this exercise low stakes, the data from this assessment should be captured only at the teacher level and not reported centrally. This helps reduce the teachers' pressure to perform for an external audience (officials at various levels) and they can use school based assessment for its real purpose i.e. student learning.

2. Systems Assessment: The Systems Assessment helps in evaluating the processes and functioning of the educational systems. Unlike School-based assessments, Systems Assessment is conducted at a sample level, where data samples are captured by third-party bodies and reported centrally. Conducting a Systems Assessment with high fidelity helps to reliably predict the support required at each level, and can help in filling implementation gaps. For example, if the data from the Systems Assessment shows that teachers in a particular region are struggling with teaching a certain FLN concept, the teacher professional development program for the said region can be developed around the said concept and delivered accordingly.

School based assessments (SBA)	Systems assessments
• To assess and monitor learning levels in the classroom • Conducted by the teacher at classroom level • Data not reported centrally • Low stakes assessments	• To assess, track and monitor overall health of the Mission • Data captured by third-party bodies (mentors/ state assessment groups) • Data captured and reported centrally • Low stakes assessments

The need for systems assessment in NIPUN Bharat

For the success of the NIPUN Bharat mission, the governance and

Mission Evaluation should be conducted through periodic Mentor dipstick and annual endline assessments

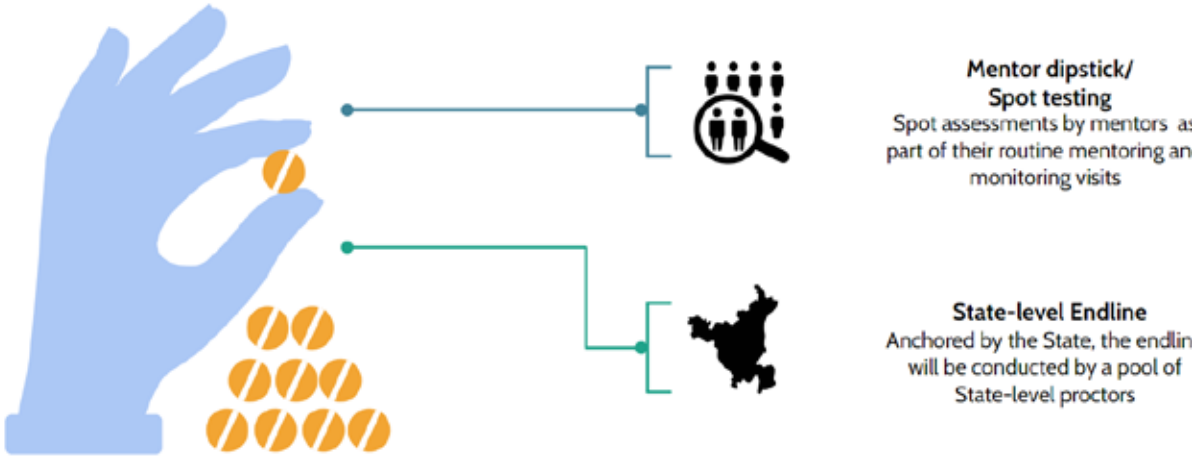

Mission evaluation is done through low stakes, sampled assessments

administration systems must be able to diagnose ongoings at each level correctly. The state mission can only be well governed if the State Project Management Unit (State PMU) is correctly aware of how each district performs. Similarly, the District PMU should have eyes on the performance of each block, and so on.This can be made possible through the systems assessment, which provides a system-level diagnosis of key mission KPIs and helps set goals at the cluster, block, district, state, and national levels; thereby building accountability across stakeholders.

The system's assessment can be further classified into two parts, based on the sample size, and the frequency of data collection/ report generation.

1. Spot assessments: Since the biggest objective of the NIPUN Bharat mission is to improve students' foundational literacy and numeracy skills, it is imperative that student learning be made a crucial proxy for mission diagnosis. Spot assessments are done to track status of student learning at any given point in time, throughout the year. These assessments must be conducted by a dedicated cadre of state selected mentors who serve dual purposes in the mission: coach teachers on the basis of classroom observation, and act as field investigators to conduct short, competency-based spot assessments with a group of students.

To conduct the spot assessment, the mentor must visit one of their assigned mentee schools and select 4-5 students from an FLN class, on a random basis. These students must then be assessed on the basis of standardised test items linked to the competencies taught by

the teacher over the fortnight. During the assessment, the mentor has to capture student data over a monitoring app, which must be analysed, resulting in the creation of highly frequent spot testing reports.

These spot testing reports aim to energise the mission at the block and cluster levels. The Block PMUs and cluster head offices can plan next steps and take data-driven actions based on these reports for quick and effective remediation- for example, low performing schools can be identified through the reports, and priority visits may be planned.

2. Endline assessments: Endline assessments must be conducted at the end of each academic year to track the mission health annually. This assessment helps in state and district level goal setting and program planning and must be proctored by a group of third party field investigators (external agencies or state 'non-teacher' bodies like DIET/ SCERT).

To conduct the endline, a significant sample of children from each FLN grade must be tested per grade. The school selection must be done using sampling techniques that best represent the population size. And the test proctors must be trained to visit the allocated schools and conduct the assessment. These students must be randomly selected and assessed using standardised assessment measures aligned to the NIPUN Lakshyas and competencies.

The field investigator has to then digitally capture the data, which is then analysed and shared with stakeholders in the form of a report. The report helps the districts with evidence-based goal-setting for the upcoming academic year.

Six factors need to be taken into account to design a strong systems assessment.

1. Modality of the assessment: To unpack the modality of systems assessment, we have to focus on two key areas -

» **Scale and scope:** The chosen sample at district and grade level must be the best possible representation of the population size while taking into account the state's resources. For enhanced ease and data reliability, the tools must be tested in the locally spoken language (or medium of instruction followed at the state level); and the examination should be proctored one-on-one by field investigators using the tools developed.

» **Frequency and reporting:** The Endline assessment should be conducted as a sample-based study every year. The results from the assessment must be analyzed and comprehensive reports should be prepared at the district level highlighting the grade, subject, and competencies that require prioritisation and recommendations for immediate action.

2. Item bank selection: As of today, there is a better understanding of how a child learns. This has led to the educational system slowly moving away from rote learning, giving way to new assessment methodologies.

One such assessment methodology is to test using the Item Response Theory (IRT), which allows the assessors to better understand each test item's quality in terms of both difficulty and the ability to distinguish between high-achieving and low-achieving students. The IRT framework, thus,

should be adopted for such assessments to produce scores that will assist in evaluating important skills such as reading ability, a student's attitude, etc.

3. Selection and Training of Field Investigators: Considering the significance of system evaluations, they should be proctored by a group of third-party proctors to limit the biases that affect the quality of data collection. These proctors could be an external assessment agency, or choose from the pool of DIET, SCERT, KRPs, ABRCs, and BRPs cadres, or students studying in Teacher education institutes.

Before beginning the exercise, the proctors must be trained on the procedure for conducting the assessment, the items and their relevance, and the use of technological tools.

4. Multistakeholder-level tech-enabled monitoring system: The primary goal of mission-level evaluations is to identify implementation gaps and support needs at various levels of the system. Hence, the tools utilised for such evaluations must be simple, easy-to-use technologies that provide insights that can be efficiently turned into action and are accessible to all.

For this, digital tools and applications (for example Tangerine) could be used to reduce the time and effort burden on the field investigators and improve the system's ability to process data in real time and generate meaningful insights.

5. Improving assessment reliability by 'Truth scoring': The endline assessment would be used to focus on what works and, more crucially, what does not. Data sources, such as mentor dipsticks, also known as spot assessments, and weather stations (groups of state personnel from the district who provide correct information/ data from the ground), should be used to ensure the data reliability from the endline assessment.

For example, Haryana has FLN coordinators to serve as weather stations to help the state understand what is and is not working and build solutions to fix what is not working. Eventually, the goal is to improve the data accuracy of the state-created monitoring system by eliminating misreported data and developing trust in the collected data to track how reforms are emerging on the ground.

6. Meaningful assessment report generation: It is important to compare apples to apples, not oranges. Hence, the data analysis and reporting phase is extremely crucial for the success of any study.

For the assessment, the reporting should be done in real-time, with triangulation of data points. This will assist the state in delivering a structured, comprehensive report that enables reporting progress irrespective of level.

Both School-based assessments and systems assessments provide crucial proxies to determine the state mission health. Using these assessments with the above considerations will empower states and institutions in improving student learning outcomes and achieving the goals of the NIPUN Bharat Mission.

Authored by:
State Lead, Central Square Foundation

Project Manager,
Central Square Foundation

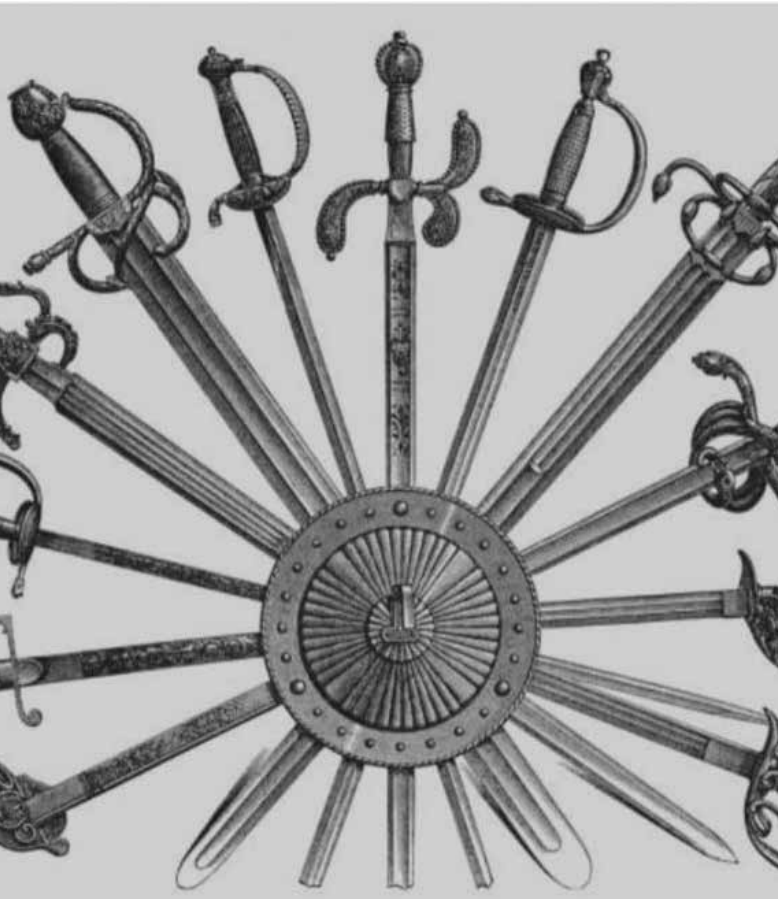

The Cost of Royalty

Jewels cut,
Throats cut,
Bloodlines whole,
Kingdoms lost.

The cost of royalty,
The subjects bore.
Ravaged and ransacked,
By invaders galore.

Ruthless rulers,
Subdued subjects.
Riches plundered,
Sovereignty surrendered.

Whether in battles or duels,
With hearts kind or cruel.
Yet they followed every rule.
The Royal rulers duly ruled.

Even though some Sovereigns blundered,
While the good citizens wondered.
But Royalty's loyal defenders revived,
And made sure the bloodlines survived.

Dr. Deviyani Singh
deviyanisingh@gmail.com

Utilisation and Management of ICT Resources in Schools: e-Leadership

Manoj Kaushik

Introduction

Leadership plays a crucial role in guiding the teaching-learning process in school settings. Principals as school leaders have a major responsibility for initiating and implementing school transformation through the use of Information and Communication Technology (ICT). They can facilitate complex decision for its integration in teaching, learning and school administration. For this reason, educational leaders must understand, promote and implement the notion that technology integration is less about technology and more about focusing on the future generations and leading teachers to a change in pedagogy.ICT can enhance teaching and learning processes, increase efficiency and productivity, and provide new opportunities for students and teachers to engage with content and each other. However, the effective integration of ICT in schools requires strong leadership and strategic planning.School leaders,therefore, become very important in the effective utilization and management of ICT in educational settings.

Effective school leaders understand the potential of ICT to transform teach-

ing and learning and are committed to using it to improve educational outcomes. They ensure that the school's ICT infrastructure is up-to-date and well-maintained. They invest in the necessary hardware and software, provide technical support, and ensure that the school's network and systems are secure and reliable.

To support teachers,an effective school leader prioritizes the use of ICT in the curriculum and ensures that teachers have the necessary training and resources to use it effectively. They also establish clear policies and guidelines for the use of ICT, such as internet safety protocols, data protection regulations, and acceptable use policies.

Another important aspect of school leadership in ICT is the promotion of digital citizenship among students. This includes educating students on responsible and ethical use of technology, as well as promoting digital literacy skills such as media literacy, online research, and critical thinking.

Effective school leadership in ICT also involves keeping up-to-date with technological developments and trends. This includes attending professional development opportunities and staying informed about emerging technologies that may have the potential to enhance teaching and learning.

E-leadership

E-leadership can be defined as the

use of ICT to manage organizations and lead people. It involves the use of various digital tools and technologies to communicate, collaborate, and coordinate with employees, stakeholders, and customers. E-leadership is essential in the digital age as it allows organizations to leverage the power of technology to achieve their goals and objectives.

Importance of ICT Utilisation and Management

The utilisation and management of ICT can bring numerous benefits to organisations, including increased efficiency, productivity, and profitability. ICT can automate repetitive tasks, freeing up employees to focus on more strategic activities that add value to the organisation. It can also facilitate communication and collaboration between employees, departments, and even between organisations. The use of ICT can also provide organisations with valuable insights into customer behaviour and preferences, enabling them to tailor their products and services accordingly. Additionally, ICT can enable organisations to reach new markets and customers, allowing for growth and expansion.

The Use of ICT in E-Leadership:

There are several ways in which ICT can be used in e-leadership. In this section, we will discuss some of the most common applications of ICT in e-leadership.

- Communication
- Collaboration
- Data Analysis
- Automation

Major ICT initiatives in Haryana school education

- e-Adhigam
- Mukhyamantri distance learning program
- EDUSAT Haryana
- DIKSHA Haryana
- Assessment Mobile Application:AVSAR
- Digital Platform for Mentoring and monitoring:SAMIKSHA

Challenges of ICT Utilisation and Management

Despite the potential benefits of ICT utilisation and management, there are several challenges that organisations may face. One of the main challenges is the lack of availability of clear guidelines of utilisation and expectations. Another is unavailability of trained staff and support system. In rapid pace of technological change, new technologies are constantly emerging, and organisations must stay up-to-date with these advancements to remain competitive.Another challenge of ICT utilisation and management is the risk of cybersecurity threats.In addition to cybersecurity risks, organisations must also manage the risk of data privacy breaches.Another challenge of ICT utilisation and management is the potential for technological obsolescence.

The road ahead: How to overcome challenges and grow

- Establish clear policies
- Provide training
- Invest in infrastructure
- Evaluate and select appropriate software and applications
- Monitor and evaluate ICT use
- Establish a support system

By following these steps, school leaders can address the challenges of ICT utilization and management and ensure that technology is being used effectively to enhance the educational experience for all students.

In conclusion, school leadership plays a critical role in the effective utilization and management of ICT in educational settings. Leaders who prioritize the use of ICT, provide support for teachers, maintain the necessary infrastructure, promote digital citizenship, and stay informed about technological developments can help to ensure that students have access to the full potential of ICT for their learning and future success.

Head,
Educational Technology Wing
SCERT Haryana, Gurugram

The Canvas of Emotions

She painted all her raw emotions,
She could hear colors in motion
Blue on a dreary day, red for anger.
Purple for her love, she lost to war.
White for the wedding gown, alas,
Still behind the showroom glass.

Strokes of slender fingers mirrored stories untold.
But in the night, dark dancing demons took hold.
Her brush unleashed hidden tormented ghouls,
The Canvas spoke, stretched like a lone wolf's howl.
Yet, amid the pain, there were moments of light,
When hope of new life filled her heart with delight.

She painted pink for the babies in prams in the park,
And lavender dreams even though her life was stark.
She painted her pain, and rainbow colored her joy,
The brush held in her taut veinous hand high.
Bled deep crimson strains straight from her heart,
Yes, but some might casually call it, just art.

Dr. Deviyani Singh
deviyanisingh@gmail.com

The Writing of a Research Paper

Ms. Rupam Jha

The dissemination of a Research Report can culminate in the writing of a Research Paper.This maximises the benefit of a research study.On the basis of one research report, two or three papers may be generated. Even if there is no report, data is necessary so as to form a basis for the research paper. So statistical data and pre-existing research are essential in starting a research paper.

A unique perspective may be drawn on the basis of a research report. It may be the perspective of the writer or may be interpretation from the available data.A research paper has all three dimensions in its fold; exploration, explanation and description.

Academic writings make for simpler processing of academic work.All the accumulated data and information gets compressed into a research paper. A report may be cumbersome but a research paper is handy along with being easy to comprehend.

A lot of skills may be developed in the process of writing a research paper. Writing skills are honed and interest in research is created. The skill or ability to define data only comes when writing a research paper.

The structure of the Research Paper should be clearly delineated. The analysis and result be clearly shown.

The maximum time should be devoted to the planning of the paper.This enables the writer to organise the writing of the paper in a structured manner. The paper should be as be as per format.

- Executive summary – highlights of the main report.
- Table of Contents – index page.
- Introduction – origin, essentials of the main subject.
- Body – main report.
- Data Analysis.
- Conclusion – inferences, measures taken, projections.
- Reference – sources of information.
- Appendix.

Another aspect of the paper is that it should not be too lengthy.The analysis has to be accurate and the description should be that of the researcher. A Research Paper validates the research study and opens doors to other avenues. The optics of a research paper is high.The paper should demonstrate strong knowledge base of the author and writer of the paper.It is also an original contribution on the part of the writer.

The language of the paper has to be formal; nothing too be loose, vague or inappropriate or unimaginative the writing should be stripped of all bias even if it makes the language bland. The length of the paper should be such that there should be around 4000-6000 words.

The topic chosen by you should be very specific in nature with suitable amount of content and of interest to the researcher. Note down page numbers and determine what is primary research and what is secondary research. Another point to be mentioned is what type of research has been conducted.Initially the paper has to be broad based and then move to specifics. At times, surprise questions spring up so the researcher is to be prepared accordingly.

Whatever maybe the writing style of the researcher, the content must be very specific and as per the title. The Abstract, besides having strong content, must be able to impress the reader with its aesthetic appeal as well. Technically speaking, tables and appendices too should be part of the research paper.

The interpretation of Data should be part of the research process. This will make it easier for the reader to comprehend the analysis. Also mentioned must be the delimitation, if any, of the paper. Then will the way forward emerge.The student community will benefit from it and so will the educational administrators.What must be kept in mind is that the paper be specific and to the point.

Undergoing the process of writing a research paper, the researcher's memory is refreshed about the entire gamut of the research process.Answers to questions are found systematically. A sense of achievement may be felt at the completion of the research paper. Affective reactions, if positive, help to boost the morale.Usage of electronic resources may be enhanced. The individuality of perspective is refreshing.

The usefulness of the Research Paper is important. How it may be carried forward and how may the student community benefit from it. What is there in the paper for educational administrators to note and how may the findings be linked to classroom instruction. This will enhance the value of the paper. The efforts put into the writing of the paper will be recognised. Researchers often get a chance to present their paper to a wider audience.

So now is the time, take out your pre collected data and start the preparation of writing a paper.Make sure you factor in the associated variables as well.A systematic presentation of data will emerge. A report may be cumbersome but the paper will be accessible to all stakeholders.

Subject Specialist
SCERT Haryana, Gurugram

Forget Past to Brighten your Future

Dr. Himanshu Garg

Life is full of ups and downs. It brings pleasant and heart-breaking surprises at regular intervals. There is no person in this world who has not experienced suffering in life. Sorrow and happiness are two sides of a coin. The burden of our past keeps alive all the insults and hurt in our lives. Sometimes these pressures even succeed in changing our fundamental nature. Then anger, hatred and disappointments take root in our minds and we become angry sulkers, frustrated and grouchy people. These sentiments impede our progress towards success. These all hinder our happiness too. Physical, Mental and Emotional Past sufferings remain permanent marks on our minds.

Life is too short. The regular thinking of past bad experiences creates a negative environment around us. A right saying-"What we think is what we get". The past negative thoughts attract negatives in our present and future too. So to attain progress, success and happiness in our present and future life, we have to give up the bad experiences of our past and get on with life. If we are interested in positive achievements, the past sufferings must be discarded with a firm hand before new windows of a bright future open before us. To achieve better health and beauty, it is mandatory to discard past anger and hatred from our hearts. A clean and healthy mind affects the body too. As a result, our body glows and becomes full of energy.

Past can never be changed but our future can be designed according to our desire to a certain extent. "Forgive and Forget with caution"-should be the motto of our lives. So live in present to design a bright future.

Asstt. Professor
Govt. College for Women, Jind
Himanshujind@yahoo.com

The Art of Taking Offence

Shubhangi Singh

The monsoons are up and the guards down; the rain beckons me. I park my car and get out to a sweet peck from a rain drop. I look up in utter freement to the infinite pouring sky that seems mine, all of it. And then Phachch! My reverie is broken by a big brown splash on my heretofore pristine white kurta and the sweet lingering smell of wet earth on my face. I wipe off the mud from my eyes to notice another grinning set, peering up at me. The eyes belong to a boy, little enough to just about reach my knee and big enough to cross his hands in disapproval. And he is standing in a puddle.

"How dare you?" I try to sound offended but my words sound hollow. "How dare you not?" He starts hopping once again, splattering mud over and around him. Chhayi Chhapa Chhai. The words, of what was once my favourite song, ring in my ears. My legs join the little boy without my permission. I let go. Together we continue our little joy dance. I lift

him up and he shakes the blooming branches of the young kachnar tree, fawning over us. We are wet, covered in blushing pink petals and mud. I put on the music in my car. We continue. I feel unlike any mere creature of the earth. We are skylings now he and I swimming in the sky.

Alien sounds break our trance. We have an audience now and it is not a small one. A man, with flailing arms and devastated features, is screeching out his grave concerns. A policeman is nodding, first at him, then at me.

"Madam, this is a shareef neighbourhood. Please don't create nuisance here."

"What nuisance?"

"Please, you should take care of your modesty, Madam. With a kid ..."

"Wha-"

"Playing loud music on road, dancing like this, littering road. Don't make me say it, please think of your child, Madam. Your dress is also ..."

"He is not my child."

"Who are you with ?"

"Alone."

"Just because you are woman, Madam, I will let you go with fine. I would have taken a man to the police station"

"For dancing?"

"I respect women, Madam. You should respect our culture too."

"I will not pay any fine."

The policewala stares at me, in what may be shock, disgust, lack of apprehension or all of them at once. He again threatens to take me to the police station. I am ready. He reminds me about my family. A woman helpfully conveys that. I have wasted flowers too, thus destroying nature. He nods again. I tell him to take me to the police station. His face is blank. I have custardified the crisis at hand, the one concerning my role in society or maybe just his identity crisis.

"Madam, go back to your family. I will leave you with warning. I respect women."

Shubhangi Singh is a freelance writer who writes content, copy, and social commentary. Her short stories have won awards, and she has published works in newspapers and literary magazines.

hishubh@gmail.com

'The Sound of Happiness!'

Laugh…
Laugh for a happy mind and soul,
Laugh when idle, laugh when you stroll.
Laugh like you don't care,
Laugh even if they stare.
Laugh your lungs out,
Laugh your thoughts out.
Laugh aloud, laugh and give a shout.
Laugh in company, laugh when lonely.
Laugh and release,
Laugh and live life with ease.
So laugh,
because it's the sound of happiness!

Nidhi Rawal Gautam
nidhirawalgautam@gmail.com

Amazing Facts

1. **The word assassination was invented by William Shakespeare**
2. Benjamin Franklin invented the rocking chair.
3. Persia changed its name to Iran in 1935
4. In the wild, the poinsettia flower can reach a height of 12 feet, and have leaves that are eight inches across.
5. The smallest bone in the human body is the stapes bone which is located in the ear
6. India used to be the richest country in the world until the British invasion in the early 17th Century
7. Some African tribes refer to themselves as "mother-hoods" instead of families
8. Between 1902 and 1907, the same tiger killed 434 people in India
9. The Chinese politician Mao Zedong refused to ever brush his teeth and instead just washed his mouth with tea
10. The Super Bowl is broadcast to over 182 countries in the world
11. Banging your head against a wall uses 150 calories an hour
12. In 1884, Dr. Hervey D. Thatcher invented the milk bottle.
13. The lifespan of a rhinoceros is generally 50 years
14. The name of the award given to honor the best sites on the Internet is called "The Webby Award."
15. The United States Mint once considered producing donut-shaped coins.
16. A Hungarian named Ladislo Biro invented the first ball-point pen in 1938.
17. Adolf Hitler loved chocolate cake
18. Snails eat with a rasping mouth called a "radula," which has thousands of teeth
19. A dragonfly has a lifespan of four to seven weeks
20. Chewing on gum while cutting onions can help a person from producing tears
21. A house cat spends 70% of its time sleeping
22. The first hair dryer was a vacuum cleaner that was used for drying hair
23. Whale eyes are the size of a grapefruit
24. Painting a house yellow or having a yellow trim helps in selling a house faster
25. Fido means faithful in Latin
26. Pebbles cereal was actually named after the shape of the cereal and not the Pebbles Flintstone character
27. A group of kangaroos is called a mob
28. Every three seconds, a new baby is born
29. More than 260,000 people have been killed by volcanic activity since 1700 AD.
30. The only predator that polar bears have are humans

https://greatfacts.com

1. Which one of these was not among the first search engines: AltaVista; Infoseek; TopBanana; Yahoo; WebCrawler, or Lycos? **TopBanana**
2. The currencies: Korean Won, Japanese Yen, and Chinese Yuan all mean literally: Gold; Paper; Rice; or Round shape? **Round shape**
3. Guan is Chinese pottery whose glazing is: Gold; Blue and white; Fish-themed; or Cracked? **Cracked**
4. A Conestoga is a heavy 1700-1800s (What?) used by Eastern US pioneers: Shotgun; Wagon; Building sand; or Flour? **Wagon**
5. Who married his co-star Lauren Bacall in 1945 after the films To Have and Have Not and The Big Sleep: Frank Sinatra; Humphrey Bogart; John Wayne; or Wayne Sleep? **Humphrey Bogart**
6. In Victorian England a 'pure finder' was a street collector of (What?) for the leather tanning industry: Rain water; Rotten vegetables; Broken glass; or Dog poo? **Dog poo**
7. When we hear an explosion three miles away, it happened roughly how long ago: 1 second; 3 seconds; 5 seconds or 14 seconds? **14 seconds**
8. Sonar (originally an acronym) commonly refers to detection using: Light; Sound; X-Ray; or Nuclear fission? **Sound**
9. Caulking, originally in boat/shipbuilding, extending to boiler making and construction, is: Bribery of officials; Paying workers in cash; Filling joints and cracks; or Holiday for brass band duty? **Filling joints and cracks**
10. What dish meant originally a white food: Custard; Blancmange; Trifle; or Yoghurt? **Blancmange**
11. Baron Hardup is whose pantomime father: Sleeping Beauty; Snow White; Cinderella; or Widow Twanky? **Cinderella**
12. Standardized pieces of text inserted into contracts/computer code are called: Ticker-tape; Copy-type; Boilerplate; or Sticky label? **Boilerplate**
13. A doppelganger is someone's: Double; Role-model; Stage persona; or Arch enemy? **Double**
14. Cape Dutch, originating 1700s, is a traditional term for the: Port of Amsterdam; Judge's robe; Afrikaans language; or Granny Smith apple? **The Afrikaans language**
15. The famous website ranking and analytics company noted for its toolbar, bought by Amazon in 1999, is called: Snopes; Alexa; Yell; or Go? **Alexa**
16. The post-Roman, German settlers of England are called: Angles; Norse; Gauls; or Normans? **Angles**
17. Emesis refers to expulsion from a: Bar; Church; School; or Stomach? **Stomach**
18. The brand Reebok is Afrikaans for the grey rhebok, which is an African: Waterfall; Wind; Antelope; or Jumping ant? **Antelope**

https://www.businessballs.com/quiz/quiz-241-general-knowledge/

आदरणीय सम्पादक महोदय!

सादर अभिवादन।

'शिक्षा सारथी' मार्च 2023 का नूतन अंक मिला। मुखपृष्ठ देखकर मन बल्लियों उछलने लगा। पत्रिका का यह अंक इन्द्रधनुष के सात रंगों के समान कला-संस्कृति, बाल-रंग, एडवेंचर, नेशनल इंटीग्रेशन, विज्ञान, अधिकार एवं पर्यावरण संरक्षण आदि से अपनी छटा बिखेर रहा है। संपादकीय लेख कला और संस्कृति के माध्यम से सर्वांगीण विकास ज्ञानवर्धक लगा, क्योंकि नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 में भी कहा गया है कि भारत की सांस्कृतिक विरासत का सरंक्षण, संवर्धन एवं प्रसार हमारी प्राथमिकता होनी चाहिए। यही भारत वर्ष की पहचान भी है। माननीय निदेशक डॉ. अंशज सिंह जी का सन्देश भी एडवेंचर गतिविधियों में भाग लेने वाले छात्र-छात्राओं में नई स्फूर्ति व ऊर्जा का संचार करने वाला है। डॉ. कादयान का लेख 'राष्ट्रीय बाल रंग महोत्सव में हरियाणा की धूम' हमेशा की तरह विशिष्टता से भरपूर है। कल्चरल फेस्ट हरियाणवी संस्कृति के परिचायक होने के साथ-साथ पत्रिका की शोभा भी हैं। मैं इस सन्दर्भ में विशेष रूप से नीलम देवी के आलेख 'अंतर्निहित कला और भाव-संप्रेषण का सशक्त माध्यम. कल्चरल फेस्ट' का उल्लेख करूँगा, जिसमें उन्होंने इस प्रकार के आयोजनों को सांस्कृतिक, बौद्धिक, सामाजिक और नैतिक विकास का अभिन्न अंग माना है। लेखिका राज्य शिक्षक पुरस्कार से सम्मानित उच्च कोटि की लेखिका हैं। इसी क्रम में सुभाष शर्मा का '29वें राष्ट्रीय विंटर एडवेंचर उत्सव' से संबंधित लेख हो या फिर डॉ. सिकन्दर सिंह सिंधू के लेख 'नेशनल इंटीग्रेशन कैंप की अवधारणा', दोनों बेहद पसंद आए। डॉ. शिवा का आलेख 'आज़ादी के अमृत महोत्सव में विद्यार्थियों ने लिखी शहीदों की शौर्य गाथाएँ ' हमें अपने देश के प्रति समर्पित रहने के भाव से जागृत करती हैं। इसी प्रकार जयवीर सिंह ने भी अपने आलेख में महिलाओं के अधिकारों के हनन के बारे में सटीक जानकारी दी है। भावार्थ यही है कि आपके मार्गदर्शन में 'शिक्षा सारथी' निरंतर ऊँचाइयों को छू रही है। पाठकों तक एक ज्ञानवर्धक और मनमोहक अंक पहुँचाने के लिए समस्त संपादक मण्डल को साधुवाद।

पवन कुमार स्वामी, प्राथमिक अध्यापक,
रामॉसंप्रावि, चुंगी नं-7
लोहारू, ज़िला-भिवानी, हरियाणा

आदरणीय संपादक जी!

सादर नमस्कार।

'शिक्षा सारथी' पत्रिका का गतांक पढ़ने का सौभाग्य मिला। कला-संस्कृति गतिविधियों को समर्पित यह अंक निश्चित रूप से संग्रहणीय है। इसमें एक स्थान पर ही प्रदेश द्वारा कला और संस्कृति के उत्थान के पावन प्रयासों को रेखांकित किया गया है। निश्चित तौर पर ये गतिविधियाँ न केवल विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास में सहायक हैं, बल्कि उन्हें अपनी 'जड़ों' से भी जोड़ती है। सुभाष शर्मा व डॉ.सिकंदर सिंह के लेख भी बेहद पसंद आए। समलेहड़ी के विद्यार्थियों ने आज़ादी के अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में 75 शहीदों की शौर्य गाथाएँ लिखी हैं, पत्रिका के जरिए उन विद्यार्थियों का यह प्रयास भी प्रदेश के सभी विद्यालयों तक पहुँचा है। 'बाल-सारथी' हमेशा की तरह बच्चों के लिए ज्ञान व मनोरंजन की सामग्री से भरपूर था। दर्शन लाल बवेजा का हर लेख विज्ञान अध्यापकों व विद्यार्थियों के लिए लाभप्रद होता है। एक श्रेष्ठ अंक के प्रकाशन के लिए साधुवाद।

सुरेश राणा
हिंदी प्राध्यापक
रावमा विद्यालय मुर्तजापुर, खंड-पेहोवा
ज़िला-कुरुक्षेत्र, हरियाणा

बाबा साहब तुम्हें नमन

दिवस चौदह अप्रैल आता।
जन्मदिन सारा जग मनाता।
करें समर्पित निज तन-मन।
बाबा साहब तुम्हें नमन।

भारत के तुम सपूत महान।
दीन-हीन का किया उत्थान।
तुमको अर्पित करें सुमन।
बाबा साहब तुम्हें नमन।

संविधान के तुम्हीं प्रणेता।
जन-जन के हो हृदय विजेता।
कुरीतियों का किया दमन।
बाबा साहब तुम्हें नमन।

मानवता की राह दिखाई।
समता की भी अलख जगाई।
भेदभाव का किया शमन।
बाबा साहब तुम्हें नमन।

सकल विश्व में सुयश तुम्हारा।
नभ में चमके ज्यों ध्रुवतारा।
बना गये तुम राष्ट्र चमन।
बाबा साहब तुम्हें नमन।

यही आपका था बस कहना।
शिक्षित और संगठित रहना।
उन्नत हो मानव जीवन।
बाबा साहब तुम्हें नमन।

उदय मेघवाल 'उदय'
मधुसूदन स्कूल के पास, कमधज नगर
निंबाहेड़ा, जिला- चित्तौड़गढ़
राजस्थान- 312601

RNI NO: HARBIL/2012/52385 POSTAL REGD NO: HR/AB-102/23-25

श्री मनोहर लाल
माननीय मुख्यमंत्री, हरियाणा

NIPUN HARYANA

हरियाणा का हर बच्चा
भाषा, गणना का पक्का

श्री कँवर पाल
माननीय स्कूल शिक्षामंत्री, हरियाणा

जागरूक अभिभावक से ही होगा निपुण हरियाणा सफल

भाषा-गणना से उज्ज्वल होगा, हर बच्चे का आने वाला कल

निपुण हरियाणा का लक्ष्य - कक्षा 3 तक हर विद्यार्थी को भाषा को समझ कर पढ़ने और गणना करने (FLN) में निपुण बनाना।

निपुण हरियाणा में माता-पिता की भूमिका

अपने बच्चे के सीखने के लक्ष्यों के बारे में जागरूक बन

FLN दक्षताओं का निर्माण घर पर गतिविधियों और संसाधनों से करें

समुदाय के सदस्यों (जैसे FLN स्वयंसेवकों, भाई-बहनों) को सक्षम करें

शिक्षकों से पूछें कि आने वाले महीने में घर पर क्या गतिविधियाँ करनी हैं

मिशन के अंतर्गत बच्चे को मिलने वाली सामग्री के बारे में जागरूक हों

समझ बूझ और ध्यान से होगा पढ़ना और पढ़ाना, पहली सीढ़ी आरोहण कर, निपुण होगा हरियाणा

स्कूल शिक्षा विभाग
हरियाणा सरकार

If undelivered Please return to c/o Shiksha Saarthi Branch, 3rd Floor, Shiksha Sadan, Sector-5, Panchkula(HR)-134114